UNIVERSAL
LIBRARY
OU_186714
UNIVERSAL
LIBRARY

OUP—24—4-4-69—5,000

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H309.25 K26G Accession No. P.G. H3947

Author केडिया, वैजनाथ

Title ग्रामीण आदर्श · 1955·

This book should be returned on or before the date last marked

# ग्रामीण आदर्श

( ग्राम-सुधार सम्बन्धी उपयोगी उपन्यास )

Post Graduate Library
College of Arts & Commerce, O. U.

लेखक—

श्री बैजनाथ केडिया

प्रकाशक—

हिन्दी पुस्तक एजेन्सी

ज्ञानवापी, बनारस ।

सर्वाधिकार स्वरक्षित

पाँचवी बार ] अप्रैल १९५५ [ मूल्य १॥)

प्रकाशक—

**हिन्दी पुस्तक एजेन्सी**

ज्ञानवापी, बनारस।

शाखाएँ—

२०३, हरिसन रोड, कलकत्ता।

बाँकीपुर, पटना।

मुद्रकः—

**मुन्नीलाल**

कल्याण प्रेस, बनारस।

# दो शब्द

इस समय ग्राम्य-संगठन और ग्रामीण आदर्शपर काफी पुस्तकें प्रकाशित हो रही हैं, सभीमें कुछ-न-कुछ नई बातें हरती हैं, पर इस बात पर लेखक बहुत कम ध्यान रखते हैं कि प्रस्तुत ग्रन्थ उन सीधे-सादे किसानों और गृहस्थोंके लिये लिखा जा रहा है, जो न तो बहुत ऊँचे-दर्जेके विद्वान ही हैं, और न उन्हें आधुनिक बातोंका पूरा पता ही है। इसलिए बहुत ऊँचे विचारोंके आधारपर लिखी हुई पुस्तकें, लेखकोंकी तरहके विद्वानोंके कामकी वस्तु हो सकती है, पर इन भोले-भाले ग्रामीणोंके लिये उसमें बहुत कम मसाला रहता है।

इसी बातको ध्यानमें रखके उपन्यासके रूपमें ग्राम्य-संगठनकी एक आयोजना तैयार की गई है। इसमेंकी अधिकांश बातोंका आधार अनुभव है, तथा प्रत्येक बात ऐसी है जो बहुत थोड़े परिश्रमसे हल की जा सकती है। अवश्य ही बिना थोड़ीसी पूँजीके आधारके इस तरहका कोई काम सिद्ध नहीं हो सकता। वर्तमानमें भी ग्राम्य-संगठनके काममें कम पूँजी नहीं लगायी जा रही है, पर वह सारी-की सारी आरम्भिक आयोजन कार्यकर्त्ताओंको भेंट चढ़ जाती है। उससे गरीब जनता बहुत ही कम लाभ उठा पाती है।

यथार्थमें तो परिश्रम भी पूँजी है और हमारे ग्रामीण

लोग कम परिश्रम नहीं करते, उन्हें तो सिर्फ एक संभालने-वाले सात्त्विक सेवककी आवश्यकता है जो उनके परिश्रमको केन्द्रीभूत करके उन्हें इससे पूरा लाभ उठाने योग्य बना सके।

इस छोटेसे उपन्यासमें बालकोंकी मनोवृत्ति कैसे विकसित की जा सकती है, इसपर विशेष ध्यान रखा गया है। यदि बहुत छोटे-छोटे बच्चोंको अपना विकास करनेका अवसर दिया जाय तो आगे चलकर वे बहुत कामके सिद्ध हो सकते हैं।

पशु-पालन, सिंचाई, सहकारिता, संगठन, सेवा, त्याग और नये-नये उद्योग-धन्धे आदि अनेक बातोंपर व्यावहारिक दृष्टिसे इसमें विचार किया गया है।

यद्यपि इसमें अधिकांश बातें अनुभवको आधार मानके ही लिखी गई हैं, अतः हो सकता है इनमें कुछ त्रुटियाँ रह गई हों। जिन महाशयोंको अपने निजी अनुभवसे इसमें कुछ भूल मालूम दे, उन्हें दया करके इसकी सूचना भेज देनी चाहिए, जिससे दूसरे संस्करणमें उसका संशोधन कर दिया जाय!

अन्तमें हमारा यही निवेदन है कि यदि इस योजनासे एक भी भाईको लाभ पहुँच जायगा तो हम अपना परिश्रम सार्थक समझेंगे।

—लेखक

———

# ग्रामीण आदर्श

## प्रथम परिच्छेद

माधव—राधा ! क्या तुम्हारा चौका-चूल्हा खतम नहीं होगा ?

राधा—भैया ! बस यह आखिरी रोटी और ले लो।

माधव—पगली, क्या इससे पेट भरता है ?

राधा—वाह ! मैं तो इतने परिश्रमसे रोटियाँ बनाऊँ और तुम्हारा इससे पेट भी न भरे ?

माधव—कहीं खेलकी रोटियोंसे पेट भरा करता है ?

राधा—तो फिर तुम इन्हें खाते क्यों हो ?

माधव—सिर्फ तुम्हें प्रसन्न करनेके लिए।

राधा—अच्छा तो मैं आजसे तुम्हारे लिए रोटियाँ न बनाऊँगी।

माधव—दुर पगली, इतनेमें ही नाराज हो गई ! रोटियाँ

क्यों नहीं बनावेगी ? यदि इस तरह खेलकी रोटियाँ न बनावेगी तो फिर असली रोटी बनाना कैसे सीखेगी ?

इसी तरह दोनों बालक बालिका नित्य ही अपना मनोरञ्जन किया करते थे। माधव इस समय आठ सालका हो चुका था और राधा छः सालकी थी।

माधव गाँवके जमींदारका इकलौता लड़का था और राधा एक गृहस्थकी होनहार बालिका थी।

माधवके पिताके पास अनगिनत धन था तो राधाके पिताके सर काफी कर्ज था। दोनों कुटुम्बोंमें इतना आर्थिक अन्तर होनेपर भी माधवको राधा बिना चैन नहीं और राधाको बिना माधवके।

माधवके पिताकी बहुत साध थी कि माधव पढ़-लिखकर वकील बने—क्योंकि जमींदार होनेके कारण उन्हें रात-दिन अदालतोंमें चक्कर लगाने पड़ते थे और वहाँके तो यह वकील ही परम आराध्य देवता होते हैं; इसलिये उनकी दृष्टिमें इन देवताओंका काफी मान था। फिर यदि उनको यह लालसा हो कि उनका प्यारा पुत्र भी यह सम्माननीय स्थान प्राप्त करे तो कोई अनुचित बात नहीं।

पर वकील बननेकी तो कौन कहे, माधवको पाठशाला जानेमें भी पूरी आपत्ति थी। जब-जब उसे स्कूल भेजा

जाता, तब-तब वह किसी न किसी तरह बीमार पड़ जाता या खाना छोड़ बैठता अथवा इसी तरहकी कोई न कोई बात खड़ी कर लेता। फिर भला उसकी माँ अपने इकलौते लालकी सिर्फ पढ़नेके लिए ऐसी दुर्दशा कब बरदाश्त कर सकती थी? उसने माधवके पितासे साफ शब्दोंमें कह दिया कि माधव स्कूल नहीं जायगा, उसे स्कूल जानेकी कोई आवश्यकता भी नहीं है। हमारे पास इस समय जो कुछ जगह-जमीन मौजूद है, उसके लिये वही काफी है।

चाहे असामियोंपर जमींदार साहबका क्रोध कितना ही तेज क्यों न हो, पर घरमें आकर उन्हें अपनी पत्नीके सामने भीगी बिल्ली ही बनकर रहना पड़ता था। इसलिए श्रीमतीजीके निर्णयके अनुसार माधवका घर रहना ही उचित समझा गया।

इधर राधाके पिता पूर्ण पुराने विचारोंके थे; उन्हें लड़कियोंको पढ़ाना अच्छा नहीं लगता था। जब-जब राधाको पाठशाला भेजनेका प्रश्न उठता, वे साफ शब्दोंमें कह दिया करते कि हमारी राधाको किसी स्कूल-पाठशालामें जानेकी आवश्यकता नहीं उसके लिये उसके गुण ही उसकी सब तरहसे सहायता करेंगे।

बात भी कुछ ऐसी ही थी। राधा जो एक बार देख या

सुन लेती वह उसे कभी नहीं भूलती। है तो वह अभी छोटी ही पर उसकी बातें इतनी ऊँचे दर्जेकी होती थीं कि कभी-कभी बड़ोंको भी उसकी बुद्धिकी प्रशंसा करनी पड़ती थी।

यद्यपि यह दोनों किसी पाठशालामें भरती नहीं हुए पर अपनी बुद्धिकी प्रखरतासे—एक दूसरेकी सहायतासे—इन्होंने अक्षर परिचय कर लिया था।

इनका गाँव एक छोटी-सी तराईमें बसा हुआ था। पहाड़की तलहटीमें एक छोटी-सी नदी बह रही थी, जिसमें बारहों महीने पानी बना रहता था। इस नदीकी सहायतासे उस गाँवके सभी लोग खुशहाल थे, वहाँ कभी अकाल नहीं पड़ता था। पर माधवके पिताका लोभी स्वभाव होनेके कारण गाँववाले प्रायः मामले-मुकदमोंमें उलझे ही रहते थे। इसलिये फसल अच्छी होनेपर भी उनके पास कुछ बच नहीं पाता था।

राधाके पिता बड़े परिश्रमी थे। उनके पास जमीनें भी काफी थीं। पर जमींदारसे अकड़कर चलनेके कारण धीरे-धीरे सारी जमीन दूसरोंकी हो गयी थी। अब सिर्फ अपने खाने भरके योग्य खेत उनके पास बच गये थे।

इन दोनों गृहस्थोंमें इतना मनोमालिन्य होनेपर भी राधा और माधवके खेल-कूदमें कोई बाधा नहीं होती। वे एक साथ नदीमें तैरते, एक साथ पहाड़ीपर चढ़ते, वृक्षोंपर चढ़कर फल तोड़-तोड़कर खाते, यहाँतक कि एक दूसरेके घर भी आते जाते। पर इनको लेकर उनमें कभी कहा-सुनीका मौका नहीं आया। राधा माधवकी माँको माँ कहके पुकारती और माधव राधाकी माँको माँ कहता। इतना होनेपर भी न तो कभी राधा ही माधवके पिताके पास जाती और न माधव ही राधाके पिताके पास जाता।

रोजकी तरह आज भी वे दोनों नदीके किनारे एक आमके वृक्षके नीचे बैठे हुए खेल रहे थे। उस वृक्षके आम बहुत ही मीठे थे, दोनोंने पेट भरके आम खाये और उतने ही बिगाड़े भी, पर इन साधारण बातोंके लिये उन्हें कोई कुछ नहीं कहता था।

खेलते-खेलते राधाने कहा—भैया माधव, कल बाबूने बेचारे रामू हलवाहेको इतनी मार मारी कि उसकी नाकसे खून बहने लगा—वह रोता हुआ माँके पास आया। उस समय मैं भी वहाँ खड़ी थी। उस गरीबका यह हाल देखकर मुझे बड़ी दया आई। माँने एक लोटा जल लाकर उसके हाथ मुँह धुलाये, कुछ खानेको दिया, इसी तरह उसे ठंडा-मीठा करके

उसके घर भेजा। पर भैया, यह लोग इन बेचारोंको इतना क्यों मारते हैं ?

माधवने उत्तर दिया—राधा ! हमारे पिता भी अपने नौकरोंको जब चाहे मार बैठते हैं। पर यह कम्बख्त कहीं जाते भी तो नहीं, मार खाते हैं और फिर वहीं आ हाजिर होते हैं।

राधा—जायँ कहाँ, इन्हें जो पाँच छः पैसे रोज मिलते हैं वही तो इनके जीवनका अवलंब है। यदि यह चले भी जायँ तो दूसरा कोई इन्हें रख सकता नहीं। फिर अपने आप ही इन्हें झख मारके उन्हींके पास आना पड़ता है।

माधव—कल मैं टहलता हुआ गणेशीके घर जा निकला। तुम तो उस समय लिहाफ ओढ़े पड़ी सो रही थी। यद्यपि दोपहरमें काफी गरमी पड़ने लगी है, पर रातको तो बिना कपड़ा ओढ़े नींद नहीं आ सकती। मैंने वहाँ जाकर देखा कि गणेशीका छोटा भैया, जो कुल तीन सालका है, योंहि बिना कुछ ओढ़े नंग धड़ङ्ग एक टूटीसी खाटपर पड़ा काँप रहा है। राधा, तुम्हीं सोचो, माघ पूसके जाड़ेमें इन बेचारोंकी क्या दुर्गति होती होगी।

राधा—जाड़ेके दिनोंकी क्या कहते हो। यही कोई दो महीनेकी बात है, सुग्गीकी माँके बच्चा होनेवाला था, रात

को उसे बहुत कष्ट होने लगा, घरमें और किसी आदमीके न रहनेसे अम्माने सुग्गीके साथ मुझे गणेशीकी माँको बुलाने के लिये भेज दिया। आधी रातसे अधिक बीत चुकी थी। मैं ऊनी कम्बल ओढ़ लेनेपर भी ठंढसे काँप रही थी। सुग्गी भी अपना मोटा कोट पहिने हुए थी। हम दोनों जब उस मोहल्लेमें गणेशीकी माँ के घर पहुँचे, तो देखा कि गणेशीका बाप तो अपना फटा चादर ओढ़े एक ओर कोनेमें दबा पड़ा है और गणेशी योंही बिना कुछ ओढ़े ही एक फटीसी साड़ीको लपेटे पुराने पुवालमें दबक रही है। गणेशीकी माँ अपने बच्चे के साथ उसी टूटी खटियापर जिसका जिक्र अभी तूने किया है, एक पुरानी गुदड़ीमें उस बच्चेको लपेटे आप बिना ओढ़े ही वहाँ पड़ी-पड़ी काँप रही है। इनकी यह दयनीय दशा देखकर मुझे बहुत दया आई। एक बार सोचा अपना कम्बल इन्हें ओढ़ा दूँ मुझे अम्मा और मँगा देंगी। पर दूसरे क्षण बाबूजीके कड़े स्वभावको याद करके मनकी बात मनमें ही रख ली।

सुग्गीने अपनी माँकी हालत कहके गणेशीकी माँको संग चलनेके लिये कहा। वह बेचारी बिना किसी तरहका हीला-हवाला किये चलनेके लिये उठ बैठी। पर छोटा बच्चा जो माँकी देहकी गरमीसे गरम हुआ सो रहा था, उसके उठते

ही जग गया और ठंढके मारे रोने लगा। उसका रोना सुनके गणेशी भी जग पड़ी—माँको बाहर जानेके लिये तैयार देखके उसके पास आ लेटी और उसे चुप करानेकी चेष्टा करने लगी। पर वह किसी तरह चुप होता ही नहीं था।

गणेशीकी माँ उसे रोता हुआ छोड़कर ही हमारे साथ हो ली। मेरे मनमें बार-बार यह बात उठ रही थी कि मैं अपना कम्बल उस बालकको ओढ़ा दूँ। पर फिर बाबूजीके डरसे वैसा करनेका साहस नहीं पड़ता था। आखिर जब हम लोग उसके घर से बाहर निकल आये और तब भी वह रोता रहा तो मुझसे रहा नहीं गया। मैं दौड़कर फिर घरमें घुस गई और अपना कम्बल उन दोनों बहन भाइयोंपर डाल दिया। कम्बल की गरमीका असर होते ही वह बालक चुप हो गया और कुछ दूर चले आनेपर भी मुझे फिर उसका रोना सुनाई नहीं दिया।

मैंने कम्बल तो उस बालकको ओढ़ा दिया, पर बाहर आकर सरदीसे काँपने लगी। गणेशीकी माँने मुझे बार-बार कम्बल ले आनेके लिये कहा, पर मैंने अपने कष्ट की कुछ भी परवा न करके कम्बल नहीं लौटाया और उसी तरह जाड़ेसे काँपती हुई घर चली आई। क्या कहूँ भैया, उस दिनका-सा आनन्द मुझे पहले कभी नहीं मिला था। जब अम्माने यह

बात सुनी तो एक बार तो वह डरी कि पिताजीको यह बात मालूम होगी तो खैर नहीं, पर थोड़ी देरमें ही अपने मनको स्थिर करके उन्होंने मेरी बहुत प्रशंसा की और चुपकेसे लिहाफ ओढ़ाके मुझे सुला दिया।

———

# द्वितीय परिच्छेद

दो साल बादकी बात है। राधा और माधवने अभी-अभी, नदीमें डूबती एक बालिकाको बाहर निकाला है। वर्षाऋतु होनेके कारण नदी बड़े जोरोंसे बह रही है। चाहे इसमें पानी उतना ज्यादा न हो, पर वेग इतना अधिक है कि एक बार तो हाथीके पाँव भी जमने नहीं पाते।

राधा और माधव सदाकी तरह इस नदीके किनारे एक वृक्षके नीचे बैठे खेल रहे थे। इसी समय एक गड़रिया बालिका अपनी भेड़ोंको पहाड़ीपर ही चरते छोड़कर पानी पीनेके लिये नदीके किनारे चली आई। पानी पीकर जैसे ही वह किनारेपर चढ़नेको तैयार हुई कि उसने पानीमें एक सुन्दर बड़ासा जंगली फूल बहते देखा। वह झटसे पानीमें कूद पड़ी। फूल तो उसके हाथ लग गया, पर वह पानीके प्रबल वेगमें अपनेको सँभाल नहीं सकी। तेज धार उसे बहा ले चली। उसने खूब जोरोंसे हल्ला मचाया, जिसे सुनकर माधवने समझ लिया और उसने राधाकी सहायता-

से वृक्षकी टूटी हुई डालको उठाकर तुरत नदीके बीचों-बीच लम्बी डाल दिया। उस जगह नदीका पाट बहुत कम रहनेसे वह लकड़ी दोनों ओरके किनारोंमें फँस गई, यह काम बहुत शीघ्रतासे किया था, इसलिये उस गड़रियेकी बालिकाके वहाँ पहुँचते-पहुँचते उसे इसका सहारा मिल गया और इस तरह उसकी जान बच गई। नहीं तो कुछ दूर आगे चलकर ही वह नदी सैकड़ों हाथ नीचे गिर रही थी, जिसमें पड़कर किसीका जीवित रहना असम्भव ही था।

इस तरह एक गरीब बालिकाकी जीवन-रक्षा कर सकनेके कारण इन दोनों बालकोंको बहुत ही आनन्द मिल रहा था।

थोड़ी देर बाद राधाने प्रश्न किया कि भैया, कल जो एक गोरेसे सज्जन रातको हमारे गाँवमें आये थे, वे कौन थे? सब लोग उनका इतना सम्मान क्यों कर रहे थे।

माधवने कहा—सुबह बाबूजी अम्मासे कह रहे थे कि वे हमारे एक बहुत बड़े नेता हैं। आजकल वे गाँवोंमें घूम-घूमकर लोगोंको कांग्रेसका सन्देश सुना रहे हैं। अभी तो वे हमारे पड़ोसवाले गाँवमें गये हुए हैं, पर आज सन्ध्या समय लौटती बार उनका हमारे इस

गाँवमें भी व्याख्यान होगा। आस-पासके गाँवोंके लोगोंको भी सूचना भेजी गई है। बड़ी भीड़ जमा होनेकी बात सुनी जा रही है।

राधा—अच्छा भैया, हमलोग भी क्या उनका व्याख्यान सुन सकेंगे?

माधव—क्यों नहीं, सब छोटे-बड़े उस सभामें जा सकते हैं। पर राधा मेरा तो दूसरा ही विचार हो रहा है। वह यह कि दूरसे चलकर लोग यहाँ आवेंगे और सभा भी देरतक होगी, यदि हमलोग उन सबको पानी पिलानेका प्रबन्ध कर सकें, तो कैसा अच्छा हो?

राधाने कहा—बात तो बहुत ठीक है। गत वर्ष जब मैं मांके साथ इस पहाड़के उस तरफ वाले गाँवमें देवीजी-की पूजा करने गई थी, तब वहाँ इतनी अधिक भीड़ हुई थी कि उसके मारे वहाँ तिल धरनेको भी जगह नहीं बची थी। लोग खानेको तो अपने साथ लाये थे, पर पानी तो वहाँ सोनेके टकेको भी नहीं मिलता था। देवीजीके मन्दिर के पास एक छोटासा कुआँ था। उंससे भला इतनी भारी भीड़का काम कैसे चलता? कई स्त्री और बच्चे तो पानीके अभावमें मरतक गये।

दोनोंकी सलाह पक्की हो गई। सभाके स्थानके पासके कुएँसे

दिनमें ही पानीके कई बड़े-बड़े बरतन भराके रख दिये। इस काम-में उन्हें बहुत कठिनाई नहीं भोगनी पड़ी। क्योंकि उनके इस विचारको घरवालोंने बहुत पसन्द किया।

ये नेता महाशय जब इस गाँवमें पहुँचे, उस समय गाँवके तथा पड़ोसके गाँवोंके लगभग दो ढाई हजार स्त्री-पुरुष इकट्ठे हो गये थे। राधा और माधवने इन आगन्तुकोंकी खूब सेवा की। इनकी देखा-देखी गाँवके अन्य बच्चे भी इस काममें जुट गये। यह लोग घूम-घूमकर सबको पानी पिला रहे थे। लोगोंको इन बालकोंका यह सेवा-भाव देखकर बहुत ही सन्तोष हो रहा था और सब लोग इनकी प्रशंसा कर रहे थे।

यथासमय उक्त नेता महोदयका व्याख्यान आरम्भ हुआ। उन्होंने थोड़ेमें पहले कांग्रेसका इतिहास बताया कि किस तरह भारतको स्वाधीन बनानेके लिये इसकी स्थापना हुई। आरम्भमें तो अंग्रेजी सरकारसे अधिकारोंके लिये प्रार्थना की जाती रही, जब उसपर विशेष ध्यान नहीं दिया गया तो शासकोंकी आलोचना की जाने लगी। उससे भी काम नहीं चला तो महात्मा गांधीके नेतृत्वमें असहयोगका कार्यक्रम इसने अपनाया। फिर तो जैसे-जैसे हमारी माँग

ठोस होती गई, वैसे-वैसे अधिकारियोंका ध्यान भी इधर झुकने लगा।

देशके बड़े-बड़े नेताओंने अपने विचारोंको कार्यान्वित करानेके लिये सरकारके द्वारा काफी सासतें सहीं। जेल तक गये। इसी तरह लड़ते-लड़ते आज नाममात्रका यह प्रान्तीय स्वराज्य प्राप्त हुआ है।

उन्होंने बतलाया कि आज आठ प्रान्तोंमें हमारी कांग्रेसकी सरकार अधिकारयुक्त होकर काम कर रही है। पर जनतामें जितनी जागृति होनी चाहिये, उतनी न होनेके कारण हम उससे पूरा लाभ नहीं उठा पा रहे हैं।

यह ऊपरके अधिकार हमें प्राप्त हो गये हैं। पर भीतर से अभी सब खोखला है। जबतक आप ग्रामनिवासी इन सब बातोंको समझ कर सामने नहीं आते, तबतक यह सब बेकार है।

आज मैं आपको अपना अनुभव सुनाऊँगा। मेरी राय-में यदि उसके अनुसार गाँवमें काम होने लगे, तो फिर हमें घरमें ही स्वराज्य मिल जाय, बाहर कहीं जानेकी आवश्यकता न रहे।

स्वराज्यमें सबसे पहले तीन बातें होनी चाहिये। (१) पेटभर खानेको अन्न, (२) तन ढकनेको—सरदी

गर्मीसे बचनेको वस्त्र और ( ३ ) रहनेके लिये छाया हुआ घर। जब मनुष्यमात्रको यह तीनों बातें पर्याप्त रूपसे हो जायंगी तब कोई दूसरेका मोहताज नहीं रहेगा।

आज हम देख रहे हैं कि रहनेके लिये छायेदार घर अथवा तन ढाकनेको वस्त्रोंकी तो बात ही क्या, भरपेट खानेको अन्न भी नहीं मिलता—जबतक पेट नहीं भरता, तबतक और कोई बात अच्छी नहीं लगती। इसलिये सबसे पहले पेट भरनेकी बात ही सोचनी चाहिये।

आप देख रहे हैं, मैं एक तन्दुरुस्त युवक हूँ, मेरे वस्त्र चाहे मोटे भले ही हैं, पर यह कहींसे न तो फटे ही हैं और न इनमें कहीं मैल दिखाई पड़ेगी—मेरा घर भी चाहे पक्की ईंटका बना हुआ न हो, वह कच्चा ही है, पर आप जाके देख सकते हैं वह खूब साफ सुथरा है और उसमें कहीं नामको भी गंदगी दिखाई न देगी।

घरमें हम चार प्राणी हैं—मैं, मेरी स्त्री, मेरी वृद्धा माता-जी और चार सालकी एक बच्ची। हम सब अपना काम अपने हाथसे कर लेते हैं, हमारे पास धन नहीं है, पर हम किसी चीजके मोहताज नहीं हैं। मेरे बदनपर आप जो वस्त्र देख रहे हैं, यह सब मेरे काते हुए सूतके बने हैं—इनकी बुनाईमें भी मैंने अपना सूत ही दिया है। रूईके लिये मैंने

कुछ पेड़ देव कपासके अपने खेतकी एक ओर लगा रखे हैं, उसी-से घर भरका काम चल जाता है। माताजी और स्त्री भी अपने लिये सूत कात लेती हैं। यदि दिनभरमें एक घण्टा नियमित रूपसे कात लिया जाय, तो एक आदमीका उतने सूतसे मजेमें काम चल जाय।

हमारे पास चार बीघा खेत है, जिसमें एक छोटासा कुंआ है। मैंने अपना एक साथी बना रखा है, जो मेरे साथ खेतमें बराबर काम करता रहता है, फसल होनेपर हम दोनों आधा-आधा बांट लेते हैं।

घरमें दो गाय और दो बैल हैं, जिनके खिलाने-पिलानेका काम हम दोनों स्त्री-पुरुष मिल-जुलके कर लेते हैं।

कुएँके पास ही पाँच बिस्वा जमीनमें नेपियर नामक घास लगा रखी है, जो सालमें पाँच बार काटी जा सकती है। फिर भी वह उसी तरह बराबर बढ़ती रहती है। रोजके खर्चके लिये घास काट लेते हैं, इसी तरह दो महीनेमें वह पांच बिस्वा खेत पूरा होता है। फिर जहाँसे आरम्भ किया था, वहाँकी घास अपनी पूरी बाढ़पर तैयार हो जाती है। पहले तो इसीसे चारेकी पूर्ति हो जाती है, कारणवश कभी कुछ कसर भी रह जाती है तो भूसा आदि सूखे चारेसे काम चला लिया जाता है।

दोनों गायोंमेंसे एक तो बराबर दूध देती रहती है। अवश्य ही कभी कुछ कम हो जाता है तो कभी अधिक भी मिलता है। गायें आठ नौ सेर दूध रोज देनेवाली हैं। घरके खर्चके अनुसार रखकर बाकीका दही जमा देते हैं। जिसमेंसे घी निकाल कर मट्ठा गांवके लोगोंको बांट देते हैं। इस मट्ठेसे कई गृहस्थोंको बहुत सहायता मिल जाती है।

घी भी आवश्यकतानुसार ही घरमें खर्च करते हैं। बाकी बेचकर उन रुपयोंसे तेल मसाला आदि घरका अन्य सामान खरीद लेते हैं।

हमारे यहाँ रोजाना दो सेर अन्नका खर्च है, जिसमें अतिथि अभ्यागत भी आ जाते हैं। इस तरह सालमें कुल बीस मनके लगभग अन्न चाहिये। गाय और बैलोंके लिये भी तीस मनके करीब लग जाता है, जिसमें अधिकांश खेतसे ही मिल जाता है।

खेतके बगलमें ही घर है। घरके पिछवाड़े जो थोड़ीसी जमीन है, उसमें कई तरहके फलोंके वृक्ष लगे हुए हैं, जिनसे हर मौसममें थोड़े बहुत फल मिलते रहते हैं तथा ईंधनके लिये उनसे ही सूखी डालें काटकर लकड़ियाँ भी मिल जाती हैं।

थोड़ी जगहमें ऋतुके अनुसार तरकारी लगा दी जाती

है, जिससे घरका तो काम चल ही जाता है, पास-पड़ोसियों को भी समय समयपर कुछ दे दी जाती हैं। तरकारीकी देख-भालका काम अब बच्ची करने लगी है। वह चरखा भी कातना सीख गई है। उसकी इच्छा है कि वह अपने काते सूतसे ही अपना वस्त्र बनवावे, पर उसका काता सूत बहुत मोटा होता है। वह कहती है मैं तो इस मोटे सूतके ही कपड़े पहिनूँगी। सम्भव है कुछ दिनोंमें उसकी इच्छा पूरी हो जायगी।

अपनी लगाई तरकारीकी वह बहुत चेष्टासे संभाल करती है। जिस दिन कोई नई चीज वह तोड़कर तरकारी बनवाती है, उसे 'हमलोगोंको खिलाकर बहुत आनन्द मालूम होता है।

वह है तो कुल चार सालकी, पर मेहनत काफी करती है जिससे उसका स्वास्थ्य बहुत अच्छा रहता है। दिनभर वह कुछ न कुछ करती ही रहती है।

यही नहीं, अबतक उसने ककहरा पढ़ना और लिखना दोनों सीख लिया है। एक सौतक गिन भी सकती है। यह सब उसकी माँ ने उसे सिखाया है। उसकी माँ घरका अपने हिस्सेका काम पूरा करके भी करीब दो

घण्टे रोज गाँवमें, यदि कोई बीमार होता है, तो उसकी देखभाल और दवादारू भी कर आती है। उसने डाक्टरीकी डिगरी प्राप्त कर रखी है।

मैं भी अपना काम करके तीन घण्टा रोज काँग्रेसका काम कर देता हूँ। अपना काम नियमित रूपसे होते रहनेके कारण इतना सब करके भी हमलोग रातके सात बजेके बाद कोई काम नहीं करते। उस समय भोजन करके भगवानकी प्रार्थना करते हैं और उसके बाद कभी भजन कीर्तन और कभी पुराणोंकी कथा कहते हैं; जिसमें हमारे गाँवके दूसरे लोग प्रायः आ जाया करते हैं। यह सब नौ बजे तक होता रहता है, इसके बाद सब सो जाते हैं।

दिनभर कसकर मेहनत करते रहनेसे नींद खूब गाढ़ी आती है, जो सुबह चार बजे ही खुलती है। नींद खुलनेके बाद हमलोग बिस्तरेपर नहीं पड़े रहते। उसी समय जंगल फरागत होकर स्नान कर लेते हैं। बादमें भगवानकी आराधना करके अपने-अपने काममें लग जाते हैं। माता-जी भी अबतक अपने हिस्सेका सब काम अपने आप करती हैं।

मैं तो गायोंके गोहालमेंसे गोबर उठाकर उसे साफ करता हूँ, बादमें संध्याकी कटी हुई सानी उनकी नादमें

दाना भूसी मिलाकर चला देता हूँ। फिर कुएँसे ताजा पानी लाकर सबको पिलाता हूँ और उनके शरीरमें लगा हुआ गोबर वगैरह भी साफ कर देता हूँ। यह सब काम करते-करते छः बज जाता है, इतनेमें हमारा साझीदार हलवाहा भी आ जाता है, जो बैलोंको खेतके कामके लिये ले जाता है। बच्ची दूधका बर्तन लेकर आ हाजिर होती है, बादमें बच्छेको पकड़नेका काम भी करती है। बड़ी शांतिसे दूध दुह लिया जाता है। हमारे यहाँके बाछा बाछी बहुत अच्छे होते हैं। क्योंकि उनके हिस्सेका दूध उन्हें बराबर मिलता रहता है। इसका बदला भी हमें भरपूर मिल जाता है। सालके बाद जब हम इन्हें बेचते हैं, तो दूसरे भाइयोंसे हमें कहीं अधिक मूल्य मिल जाता है।

दूध दुहकर गाँवके ग्वालेके हाथ गायें चरानेके लिये सौंप दी जाती हैं—जो बदलेमें अन्नके रूपमें अपनी मजदूरी लेकर साल भरतक यह काम करता रहता है।

इधर स्त्री भी अपने काम में जुट जाती है। सबसे पहले वह घर बुहारती है। बादमें उस कूड़ेके साथ मेरा इकट्ठा किया हुआ गोबर लेकर खेतमें खादके गड्ढेमें डाल आती है। फिर चौका चूल्हा लीपती है तथा रातके कोई माँजने योग्य बर्तन होते हैं तो माँजती है। फिर कुएँसे

पानी भर लाती है। यह सब काम बहुत थोड़े समयमें पूरे हो जाते हैं।

माताजी रातका जमाया हुआ दही उतारकर उसे गरमीके दिनोंमें ठंडा करके तथा जाड़ेके दिनोंमें गरम करके मथने (विलोने) का उपक्रम करती हैं। इस काममें वे बहुत तजुर्बा रखती हैं। उनके बराबर स्त्री अभी नहीं पहुँच सकती। जब कभी उसको यह काम करना पड़ता है तो बहुत डरकर करती है, पूरी मेहनत करनेपर भी उनके जितना घी नहीं निकलता। माताजीको इस काममें काफी समय लग जाता है। बादमें बहूको साथमें लेकर आटा पीसने बैठ जाती हैं। गरमीके दिनोंमें तो अन्य कामोंके पहले आटा पीसती हैं। जाड़ेके दिनोंमें बादमें—फिर स्त्री तो रसोई बनानेमें लग जाती है और माताजी अन्न वगरह सुधारनेमें।

बच्ची भी चुप नहीं बैठती। वह अपने तरकारीके खेतमें पानी चलाती है, कामके योग्य तरकारी तोड़ती है तथा सड़े गले पत्ते उठाकर खादके गढ़ेतक पहुँचा देती है। इसके सिवा कभी अपनी दादीकी कभी माँकी कुछ-कुछ सहायता भी करती रहती है।

हमारे पास तो बहुत थोड़ी जमीन है। इसलिए

हमारे बैलोंको बहुत अधिक काम नहीं करना पड़ता, जब सिर्फ जोतनेका काम रहता है, तब हम दोनों मिलकर खादके गढ़ेसे खाद लाकर खेतमें डालते हैं—खादके हम दो गढ़े रखते हैं, एकमेंसे खाद काम लेते रहते हैं और दूसरेमें इकट्ठा करते जाते हैं—उसे फैलाते हैं और बादमें पानी चला देते हैं।

हमारे कुएँमें रहँट बैठा हुआ है। इसलिए आवश्यकतानुसार पानी चलानेके बाद बैलोंको छोड़ देते हैं। जब खेत जोतने और बोनेका काम होता है, तब भी उनसे एक साथ अधिक काम नहीं लेते। हाँ जब मौसिम अनुकूल नहीं होता और उधर खेत जोतनेका काम भी करना पड़ता है और इधर पानी भी चलाना पड़ता है, तो उस समय बैलोंसे कसके काम लेना पड़ता है।

इस तरह ग्यारह बजेतक हमारा खेतका दैनिक काम पूरा हो जाता है। हलवाहा अपने घर चला जाता है और हमलोग आनन्दसे भोजन करते हैं। इसके बाद खेतपर हमारा काम नहीं रहता। हमारा साझीदार हलवाहा गाय बैलोंके लिए घास पानीका प्रबन्ध करता है। उन्हें खिलाता है, सन्ध्याका दूध दूहता है, गोहाल साफ करता है तथा

गोबरको खादके गढ़ेतक पहुँचा देता है। यदि आवश्यकता होती है तो रहँटके द्वारा पानी भी चला देता है।

भोजनके उपरान्त हमलोग सब चरखा कातने बैठ जाते हैं। इस समय गाँवके अन्य स्त्री-पुरुष भी जो हमारे विचारोंसे सहमत हैं, वहाँ चर्खा कातने आ जाते हैं। हाथसे चर्खा चलता रहता है, मुँहसे बातें भी होती रहती हैं, उस समय प्रायः सभी विषयोंपर तर्क-वितर्क होता है, जिससे गाँववालोंको बाहरी दुनियामें कहाँ क्या हो रहा है इसका बहुत कुछ ज्ञान प्राप्त हो जाता है।

धीरे-धीरे हमारे गाँवमें हमारी तरह कई गृहस्थोंने अपना कार्यक्रम बना लिया है, पर उनकी संख्या अभी बहुत थोड़ी है। अधिकांश तो अपनी उसी पुरानी परिपाटीपर ही चल रहे हैं, पर वे भी हमारे कामोंको बहुत बारीक दृष्टिसे देखा करते हैं। अवश्य ही उनकी बिना जानकारीके ही उनके दैनिक कामोंमें पहलेसे बहुत कुछ परिवर्त्तन हो गया है जिसका प्रमाण हमारे गाँवमें जाते ही दिखाई देने लगेगा।

आप समझ रहे होंगे कि मैं जो कुछ कह रहा हूँ, वह अपनी बहादुरी दिखानेके लिए है। नहीं, मेरा यह अभिप्राय कदापि नहीं है, मैं तो सिर्फ आप लोगोंको यह

बता देना भर चाहता हूँ कि यदि आदमी नियमित रूपसे काम करे, तो वह बहुत थोड़े समयमें बहुत अधिक काम कर सकता है। साथ ही उसे अपनी दैनिक आवश्यकताएँ पूरी करनेके लिये किसीका मुँह देखनेकी आवश्यकता नहीं रह जाती।

आप जानते हैं कि अपने हलवाहोंको आप पाँच छः पैसेसे अधिक नहीं देते, सो भी खेतमें काम हो तब। पर हमारा हलवाहा अवश्य ही इससे कई गुनी मजदूरी पाता है, सो भी साझीदार बनके, उसके ऊपर हमें कभी धौंस जमानेकी जरूरत नहीं पड़ती। अपने हिस्सेका सारा काम वह अपने आप ही खुशी-खुशी कर लेता है। उसके घरके लोग भी अपने अन्य भाइयोंसे बहुत अच्छी स्थितिमें रहते हैं। उनके भी एक साफ सुथरा घर है, पहननेको कपड़े हैं, गाय हैं। वे भी चरखा चलाते हैं तथा अपनी आवश्यकताके अनुसार सूत कात लेते हैं।

सन्ध्याके तीन घण्टे मैं कांग्रेसके काममें लगाता हूँ, इसी तरह आसपासके गाँवोंमें जाकर अपने पाँवोंपर खड़े होकर अपना काम आप कर लेनेकी सलाह देता हूँ। जो लोग उसके अनुसार काम करना चाहते हैं, उन्हें काम करके रास्ता दिखा देता हूँ तथा

अन्य जो काम कांग्रेस अधिकारी मुझे सौंपते हैं उन्हें पूरा कर देता हूँ।

इस तरह उन महाशय ने लोगोंमें एक नया उत्साह भरकर व्याख्यान समाप्त किया। इधर हमारे राधा और माधव भी आगन्तुकोंको पानी पिलानेकी सेवा करते हुए ही यह सारा व्याख्यान हृदयंगम कर रहे थे।

———

# तृतीय परिच्छेद

माधव—राधा ! तुम जानती हो, कल जो महाशय हमारे गाँवमें व्याख्यान देने आये थे वह कौन हैं ?

राधा—नहीं भाई, मैं तो उन्हें नहीं जानती ।

माधव—रातको भोजन करते समय पिताजी माताजीसे कह रहे थे, वह एक बहुत बड़े आदमीके लड़के हैं। इनके पिता कोई चार साल हुए मर चुके हैं। वे कई लाखकी सम्पत्ति इनके लिए छोड़ गये हैं। इनकी जहाँ शादी हुई है वे भी एक बहुत बड़े आदमी हैं। यह विलायत जाकर बारिस्टरी पास कर आये हैं, इनकी पत्नी भी डाक्टरी पास कर चुकी हैं ।

राधा—जब वे इतने बड़े आदमी हैं तो कल अपने व्याख्यानमें यह क्यों कह रहे थे कि हम गरीब हैं ?

माधव—यही सवाल माताजीने भी पिताजीसे किया था। इसके उत्तरमें वे कहने लगे कि जिस दिन इनके पिताका स्वर्गवास हुआ, उसी दिन अपनी माताजी की सलाहसे इन्होंने यह तय कर लिया कि अपने

पिताकी सारी सम्पत्तिका वे एक ट्रस्ट बना देंगे और उसकी सारी आमदनी गरीब किसानों और मजदूरोंकी सहायतामें लगाई जावेगी। अपने लिये वह इसमेंसे कुछ भी नहीं लेंगे।

राधा—मालूम होता है तभी वह गाँवमें आकर बस गये हैं और बहुत किफायतके साथ जीवन निर्वाह कर रहे हैं।

इसी तरह दोनों बातें करते हुए उस पहाड़ी नदीके किनारेसे उद्गम स्थानकी ओर बढ़े जा रहे थे। जब तराईसे कुछ ऊँचेपर आये, तो माधव खड़ा होकर एक ओर गौरसे देखने लगा।

राधाने पूछा—भैया, क्या देख रहे हो ?

माधवने एक ओर उँगली उठाकर दिखाया कि सामनेकी उस पहाड़ीको देख रही हो न, जो इसी पहाड़ीसे निकलकर बीचमें कुछ जगह छोड़कर आगे चलकर फिर मिल गई है।

राधा—हाँ, देख रही हूँ। यह तो ठीक हमारे गाँव के सामने वाली पहाड़ी है, जिसके नीचे हम सबके खेत हैं।

माधव—हाँ, यह वही पहाड़ी है। मैं सोच रहा हूँ कि यदि इस नदीका एक किनारा तोड़कर इस पहाड़ीके बीच वाली जमीनमें

पानी भर दिया जाय, तो फिर हमारे खेतोंमें सिंचाईका बहुत सुभीता हो जाय।

राधा—बात तो ठीक है, पर इधरके इस शिलामय स्थानको हमलोग कैसे तोड़ सकते हैं ?

माधव—यह बात तो ठीक है कि हम इन पत्थरोंको नहीं तोड़ सकते, पर आजकल ऐसे कई तरीके निकल गये हैं जिनसे यह बहुत आसानीसे तोड़े जा सकते हैं। गये साल जब मैं माताजीके साथ देहरादून गया था, तब मैंने देखा था कि हरिद्वारसे देहरादून जाते समय बीचके एक बहुत बड़े पहाड़को तोड़कर उसमेंसे रेलकी लाइन निकाली गई है। फिर इस छोटीसी पहाड़ीके एक कोनेको तोड़नेमें कौनसी कठिनाई पड़ सकती है ?

राधा--बात तो ठीक है। फिर इसके लिये क्या उपाय करना चाहिये ?

माधव—मुझे तो यह बात जँचती है कि आज सन्ध्याको माताजीसे आज्ञा लेकर कल सुबह मैं कलवाले व्याख्यान-दाता महाशयके घर जाऊँ और उनसे इस विषयमें सलाह लूँ।

राधा—वहाँ जानेके पहले अपने पिताजीसे ही इसकी चर्चा क्यों नहीं करते ?

माधव—वे तो पुरानी बातोंपर ऐसे अड़े रहते हैं कि किसी नई बातपर उनको विश्वास ही नहीं होता। यहाँतक कि आजकल नये लोहेके हलों से लोग खेतोंकी काफी तरक्की कर रहे हैं, पर उन्हें तो वे ही पुराने ढङ्गके काठके हल ही अच्छे लगते हैं। वे तो इस तरहकी बातें भी पसन्द नहीं करते। न जाने कल वे उनका व्याख्यान कैसे शान्तिपूर्वक बैठकर सुन सके।

राधा—अच्छा माधव, कल यदि तुम उनके गाँवपर जाओ तो हमारे लिये एक चरखा भी मांगियो। सुना है जो नियमित रूपसे चर्खा कातना स्वीकार करते हैं, वे उन्हें अपने पाससे मुफ्तमें चर्खा ही नहीं देते, साथ ही सिखानेका भी प्रबन्ध कर देते हैं।

माधव—राधा, यह तो तुमने मेरे मनकीसी बात कह दी। मैं भी उनसे एक चर्खा माँगूँगा और फिर हम दोनों नियमित रूपसे चर्खा काता करेंगे।

दोनोंकी सलाह ठीक हो गई, फिर इधर-उधर कूद फाँद-कर पेड़ोंपर चढ़कर फल खाने लगे और जब सन्ध्याको घर लौटे तो माधवने अपनी माँके सामने वह प्रस्ताव उपस्थित किया।

पहले तो वे राजी नहीं हुईं, पर माधवके बहुत जिद्द करनेपर

उन्होंने भेजना स्वीकार कर लिया और उसी समय अपने एक नौकरको सहेज दिया कि कल सवेरे वह माधवको उनके यहाँ ले जाय।

माधव एक भावुक बालक था। उसे अपनी नई सूझके लिये बहुत उत्साह हो रहा था। उसका विश्वास था कि वे उसका प्रस्ताव सुनके अवश्य यहाँ आवेंगे और इस विषयको हल करने का उद्योग करेंगे।

उस रातको माधवको अच्छी तरह नींद भी नहीं आई। उसका मन बराबर इसी बातको सोचने और समझनेमें लगा रहा। बहुत रात गये उसे थोड़ी नींद आई, पर तड़के ही वह फिर जग पड़ा और धीरेसे बिस्तरेसे उठकर शीघ्र ही तैयार हो बैठा। नौकर भी अपने समयपर आ हाजिर हुआ।

अपनी मांसे आज्ञा लेकर वह भोर होते-होते घरसे निकल पड़ा, वह गाँव उनके गाँवसे बहुत दूर नहीं था, पर कोई अच्छा रास्ता न होनेके कारण खेतोंकी मेड़-मेड़ चलना पड़ता था। जिससे दो कोसके रास्तेके लिये तीन कोसका चक्कर लगाना पड़ता था।

माधव किसानका लड़का था। रात-दिन इधर-उधर घूमता फिरता रहता था। इसलिए इतनी दूरका चलना उसके लिये एक साधारण बात थी। वह उत्साह पूर्वक चल

रहा था, इससे डेढ़ पौने दो घण्टेमें वह वहाँ जा पहुँचा। उस समय वे अपने खेतमें पानी पटा रहे थे, उनका साथी हलवाहा रहँटके बैलोंको हाँक रहा था। घरमेंसे चक्की चलनेकी मधुर ध्वनि आ रही थी।

विश्वनाथजीने (यही उन सज्जनका नाम था) दूरसे ही माधवको पहचान लिया था, क्योंकि परसों इसके हाथसे कई बार उन्हें पानी पीना पड़ा था।

माधवने उन्हें प्रणाम किया उन्होंने भी बदलेमें हाथ जोड़कर "वन्दे" कहा। उन्हें काम करते देखकर माधव एक ओर खड़ा रह गया। उनका काम प्रायः हो चुका था, इसलिए माधवको अधिक देर नहीं ठहरना पड़ा। उन्होंने अपने साथीसे पूछा कि इसके बाद अब और क्या करना है? उसने कहा—भैया, अब तो आज और कुछ काम नहीं है, सिर्फ नेपियरमें पानी चलाना है, वह तो अकेला ही कर लूँगा।

विश्वनाथजीने अपने हाथ पाँव धो डाले और माधवको साथ लेकर अपने बैठकखानेमें चले आये। यह बैठक खाना क्या था। एक लिपी-पुती स्वच्छ कोठरी थी, जिसमें एक ओर एक तख्त बिछा हुआ था, जिसपर एक सफेद खद्दरकी चादर बिछी थी। पासमें ही बाँसके बने हुए कई मोड़े रखे थे, उन्हींमेंसे एकपर वे बैठ गये और दूसरेपर माधवको बैठनेका इशारा किया। नौकरको

आँगनमें बैठते देखकर तीसरे मोढ़ेपर उसे बैठनेको कहा, पर वह भला आदमी किसी तरह भी मोढ़ेपर नहीं बैठा। अन्तमें उन्होंने उससे कहा—अच्छा, तुम बाहर ब्रजकिशोर ( हलवाहेका यही नाम था ) के पास चले जाओ, वहाँ जाकर आराम करो। उन्होंने ब्रजकिशोरको आवाज देकर बुलाया और इसे साथ ले जाकर उचित प्रबन्ध कर देनेको कहा।

इतनेमें ही एक छोटी बच्ची दौड़ती हुई आई और विश्वनाथजीकी गोदमें बैठकर कहने लगी, पिताजी, मेरे बगीचेमें आज बड़े सुन्दर-सुन्दर बैंगन निकले हैं, जब मैंने माताजीको दिखाये तो उन्होंने कहा, बेटी चम्पा ( यही बालिकाका नाम था ) अभी यही खूब बढ़ेंगे तब तरकारीके योग्य होंगे।

चम्पाने प्रश्न किया—अच्छा पिताजी, अभी उनकी तरकारी क्यों नहीं बन सकती ? उस दिन तो आप उस ककड़ीकी लतासे छोटे-छोटे फल ही तोड़कर खा रहे थे और हम सबको भी खिला रहे थे।

विश्वनाथजीने प्यारसे उसके बालोंको ठीक करते हुए कहा—हाँ बेटी, ककड़ी तो छोटी और बड़ी दोनों तरहकी खाई जा सकती है। क्योंकि वह कच्ची भी मीठी होती है, पर बैंगन कच्चे उतने मीठे नहीं होते, यह तो बड़े होकर पकनेपर ही तरकारीके योग्य होंगे।

बस चम्पाको इतना समझाकर कह देना ही काफी था। अब उसको कभी कच्चे बैगन तोड़ते कोई नहीं देखेगा।

विश्वनाथजीने पूछा—क्या तुम्हारे बगीचेमें पानी चलाया जा चुका है?

चम्पा—हाँ, आज सबसे पहले उसीमें पानी दिया गया था। जब ब्रजकिशोर काका आये तो उन्होंने कहा, चम्पा आज-कल दिनमें धूप बहुत अधिक पड़ने लगी है, इसलिए तड़के ही बगीचा सींच देनेसे दिनभर पौधोंको आराम मिलेगा। इसलिये उन्होंने रहँट चलाया और मैंने क्यारियाँ पटाईं। ओहो, बड़ा मजा आता था। सरसर करके पानी क्यारियोंमें आने लगता और जरासी देरमें क्यारी भर जाती। मैं दूसरी क्यारी खोलती और पहली बन्द करती कि फिर सरसर करके उसमें भी पानी भर जाता। इसी तरह थोड़ी देरमें सारा बगीचा सींच दिया गया।

इसी तरह बातें करके वह जैसे कूदती-फाँदती आई थी, वैसी ही माधवकी ओर टेढ़ी निगाहसे देखती हुई चली गई।

चम्पाका इस तरह माधवको देखना कुछ अर्थ रखता था, वहाँसे वह सीधी अपनी माँके पास गई और किसी आगन्तुकके आनेकी सूचना दे दी।

अन्नपूर्णा देवी ( यही विश्वनाथजीकी पत्नीका नाम था ) पीसना समाप्त कर चुकी थीं; बर्त्तनमें आटा भर रही थीं। आटा बटोरकर एक ओर रख दिया और हाथ पाँव धोकर तुरन्त कपड़े बदल डाले, बादमें दो कटोरोंमें गरम दूध लेकर वहां जा उपस्थित हुईं जहाँ विश्वनाथजी माधवके साथ बैठे बातें कर रहे थे।

अन्नपूर्णा देवीके बैठकमें प्रवेश करते ही विश्वनाथ कहने लगे कि जिन दो बालक-बालिकाओंका मैं कल जिक्र कर रहा था, उनमें एक यही हैं। इनका नाम माधवप्रसाद है। यद्यपि अभी इनकी अवस्था बहुत कम है, पर इनकी सूझ बहुत ऊँची है। इनके गांवके पासका जो पहाड़ है उसके एक ओर बीचमें कुछ खाली स्थान पड़ता है। इनका कहना है कि उसके पासमें गुजरनेवाली नदीका यदि थोड़ासा हिस्सा तोड़कर उस गढ़ेमें पानी ले लिया जाय, तो वहाँ एक छोटीसी झील बन सकती है, जिससे इनके गाँवके उस ओरके खेत बहुत आसानीसे सींचे जा सकते हैं। यह मुझे लिवानेके लिए आये हैं कि मैं चलकर उसे देखूँ और यदि इनकी धारणा ठीक ठहरे तो उसका कुछ उपाय बताऊँ।

अन्नपूर्णादेवीने बड़े ही स्नेहकी दृष्टिसे माधवकी ओर

देखते हुए कहा—क्या हरज है; यदि आज कोई विशेष कार्य न हो तो देख आइये। यह कोई साधारण बात नहीं है। वह स्थान तो सैकड़ों हजारों वर्षोंसे इसी तरह पड़ा हुआ है। आजतक यह बात किसीकी समझ में नहीं आई। सम्भव है इनके मनमें ऐसी बात उठनेसे कोई खास परिणाम सिद्ध हो सकता है।

इधर इस तरह बातें हो रही थीं और उधर अन्नपूर्णाजीका लाया हुआ कलेवा भी चल रहा था। इसी बीचमें दो लँगड़े आम दोनों हाथोंमें लिए हुए फुदकती हुई चम्पा फिर वहाँ आ उपस्थित हुई और अपनी माँके हाथमें उन्हें देकर कहने लगी—माताजी! यह आम बहुत अच्छे हैं, इन्हें छीलकर (माधवकी ओर इशारा करके) खिलाइये।

माधवने हँसकर कहा—क्या तुम नहीं खाओगी? यदि तुम खाओ तो मैं भी खा सकता हूँ।

चम्पा—भैयाजी खाऊँगी क्यों नहीं, इस वृक्षके आम बहुत अच्छे होते हैं। जब इसमें पहले-पहल फूल आये थे, मैं समझती थी कि हमारे बागकी ककड़ीकी तरह यह भी दस-पन्द्रह दिनमें खानेको मिलने लगेंगे। पर यह तो बहुत दिनोंके बाद मिले, दादीने कहा कि आम बहुत दिनों बाद तैयार होते हैं।

अन्नपूर्णादेवी—अच्छा चम्पा, क्या बाहरवाले मेहमानको आम नहीं खिलाओगी?

चम्पा—पहले तो मैं उनको ही देकर आई हूँ, काका उन्हें छीलकर खिला रहे हैं।

इसी तरह थोड़ी देर बालविनोद सुननेके बाद—विश्वनाथजीने अन्नपूर्णादेवीसे कहा—आज ऐसा कोई आवश्यक काम नहीं है, नियमित चरखा कातना है। सो आजके बदले कल पूरा कर लिया जायगा, मैं अभी इनके साथ जा रहा हूँ, इनकी बात सुनकर, मेरे मनमें भी एक कुतूहलसा हो रहा है।

---

# चतुर्थ परिच्छेद

उस दिनके व्याख्यानके बाद विश्वनाथजीको माधवके गाँवके प्रायः सभी लोग जान गये थे। जब माधवके साथ यह गाँवमें पहुँचे तो लगभग दोपहरका समय हो गया था। पर उस दिन बदली छाई हुई थी, इसलिए धूप बिलकुल नहीं थी।

माधवके आग्रहसे उन्होंने दोपहरका भोजन उसीके घर किया—राधा तो बीचमें विराजमान थी ही। जबसे माधव इन्हें बुलाने गया था तबसे वह बैठी उन्हींका आसरा देख रही थी। उन्हें दूरसे आते देखकर ही वह दौड़कर इनके पास पहुँच गई थी।

भोजनके उपरान्त विश्वनाथजी उस पहाड़ीकी ओर चले। साथमें राधा और माधवके अतिरिक्त और भी बहुतसे गाँवके लोग हो लिये। माधवके पिता भी साथ ही थे। यह मंडली अपने इच्छित स्थानपर जा पहुँची। विश्वनाथजीने गौरसे सारी परिस्थितिका निरीक्षण किया। बालक माधवकी सूझपर उन्हें बहुत आश्चर्य हुआ, क्योंकि प्रकृतिने उस जगहको इस ढंगसे

बनाया था मानो नदीकी ओर पत्थरोंकी दीवार बनाके इस झीलमें पानीका आना रोका गया हो।

विश्वनाथजीने उपस्थित मंडलीको समझाया कि इस स्थानके विषयमें माधवने जो बात सोची है, वह बहुत ठीक है। यदि बारूद लगाकर नदीके करारके इस अंशको उड़ा दिया जाय, तो बरसातके दिनोंमें बहुत सहजमें इस नीची जमीन को, जो चारों ओरसे छोटी-छोटी पहाड़ियोंसे घिरी हुई है, पानीसे लबालब भर लिया जा सकता है, फिर भी यह नदी साल भरतक ज्योंकी त्यों बहती रहेगी।

माधवके पिता ठाकुर भोलासिंहने विश्वनाथजीसे पूछा—बाबू साहब, नदीके इस किनारेको तोड़नेमें कितना खर्च लगेगा ?

विश्वनाथ—बहुत ज्यादा नहीं, यही कोई चार-पाँच सौ रुपयेमें यह काम हो जायगा, क्योंकि बरसातके दिनोंमें नदीका पानी बहुत ऊँचेसे बहता है। इसलिये यह सामनेका किनारा आधा तोड़ देनेसे ही काम चल जायगा।

भोलासिंह—तो बाबू साहब, आप इसका प्रबन्ध कर दीजिये, मैं इसका सारा खर्च देनेको तैयार हूँ। पहाड़ीका यह हिस्सा मेरी जमीन्दारीके भीतर ही है। इसलिए इसके लिए किसीसे कुछ पूछनेकी भी आवश्यकता नहीं है।

बात यह थी बाबू विश्वनाथके मुँहसे अपने पुत्रकी सूझकी बार-बार प्रशंसा सुनकर ठाकुर साहबको इतना आनंद प्राप्त हो रहा था कि पाँच चार सौ रुपयेकी तो बात ही क्या, यदि इस समय दो चार हजारका भी प्रश्न होता तो वे उसे स्वीकार कर लेते।

थोड़ी देर इधर-उधर घूम फिरकर बाबू साहबने उस जगहको और भी बारीक दृष्टिसे देखा और अपने मनकी अनेक शंकाओंपर विचार किया, अन्तमें वे निश्चयपर पहुँच गये।

सब लोग गाँव लौट आये, वहींसे बाबू साहबने अपने एक सहपाठीको पत्र लिखा जो आजकल सरकारमें इंजीनियरिंग विभागमें काम कर रहे थे। लिखा कि वे यहाँ तुरंत आवें और इस समस्याको हल करनेका उपाय बतावें।

इतना सब करके वे अपने गाँवको लौट गये, और माधव अपनी इस सूझके कारण गाँववालोंकी दृष्टिमें बहुत ऊँचा उठा हुआ मालूम होने लगा।

तीसरे ही दिन बाबू विश्वनाथ अपने मित्र इंजीनियरके साथ फिर उस गाँवमें आये और माधवको साथ लेकर उस पहाड़ीपर गये।

इञ्जीनियर साहबने बाबू साहबकी रायको बहुत ठीक

बताया और उनके कहनेके अनुसार उस कामको हाथमें लेनेके लिए राजी हो गए। और दूसरे ही दिनसे मजदूर लग गये।

रातको डाइनामाइटकी सुरंग लगाई जाती और उससे उड़े हुए पत्थरोंको दिनमें वहाँसे अलग कर दिया जाता। इस तरह पंद्रह दिनके परिश्रमसे वह काम ठीक हो गया और उन्होंने नदीके गर्भको मापकर माधवके पिता ठाकुर भोलासिंहको समझा दिया कि अबकी बरसातमें आपकी यह पहाड़ीकी ढालू जमीन एक झीलका स्वरूप धारण कर लेगी।

बाबू विश्वनाथजीकी धारणाके अनुसार यह काम पाँच सौके भीतर ही पूरा हो गया।

आधा जेठ बीत चुका था। अब राधा और माधव को और कोई काम अच्छा नहीं लगता। वे सबेरे ही उठकर उस कटे हुए स्थानके पास आ बैठते और दोपहरको सिर्फ रोटी खानेके लिए घर जाते। फिर सन्ध्या होनेतक वहीं बैठे रहते।

इसी तरह सारा जेठ बीत गया। आषाढ़के दस बारह दिन भी बीत गये पर पानीका नाम नहीं, उन दोनोंको सिर्फ यही धुन लगी हुई थी कि मेह कब बरसे और कब

यह झील पानीसे भर जाय। जहाँ जरासा भी बादलका टुकड़ा दिखाई देता कि उनका कलेजा बाँसों उछलने लगता, पर जब हवाका एक ही झोंका उसे उड़ा ले जाता तो फिर निराशा छा जाती।

आषाढ़ वदी १५ को इन दोनों बालकोंने दिनभर आसमानकी ओर देखते बिताया। क्योंकि आज सुबहसे ही गहरी बदली छाई हुई थी। पर अन्तमें सन्ध्याको निराश होकर लौट आये।

आधी रात बीत चुकी थी, बादलोंकी जोरोंकी गड़गड़ाहटसे माधवकी नींद टूट गई। वह मकानके बाहर निकलकर देखने लगा, खूब जोरोंकी बिजली चमक रही थी, ऐसी जोरोंकी कि मानों वह सारे संसारको निगल जायगी।

माधव डरसे घरके भीतर चला आया। खाटपर दबकके सो गया, पर नींद नहीं आई। एक बार फिर जोरकी गड़गड़ाहट हुई और टपाटप बड़ी-बड़ी बूँदें पड़ने लगीं। माधवके घरके बाहरकी ओर टीनोंका सायबान था, उसीपर बूँदोंके आघातकी आवाज सुनाई पड़ रही थी। देखते-देखते मूसलाधार पानी पड़ने लगा, इतने जोरसे कि घर-भरके लोग जाग पड़े। यही क्यों सारा गाँव सचेत हो गया।

इस समय वर्षा किसानोंके लिये बहुत ही अमूल्य होती है। फिर उस झीलके लिए भी लोगोंको कम उत्सुकता नहीं थी।

लगातार तीन घण्टेतक पानी गिरता रहा। भोर होनेके कुछ पहले बन्द हुआ। सभी गृहस्थ बैलोंको खिलाने-पिलानेमें लगे हुए थे। कोई हल सँभाल रहा था, कोई कुदाल ढूँढ़ रहा था। इधर माधव भी पहाड़ीकी ओर जानेकी तैयारी कर रहा था। इतनेमें ही राधाने दरवाजेपर आकर आवाज लगाई—माधव भैया, चलो तुम्हारी झील देखने चलें।

दोनों बालक बड़ी उत्सुकतासे पहाड़की ओर लपके चले जा रहे थे। उनके मनमें ऐसी इच्छा उठ रही थी कि यदि उनके पर होते तो वे उड़के वहाँ जा पहुँचते।

जैसे-जैसे दोनों वहाँ पहुँचे। जल्दी-जल्दी पहाड़ीके एक सिरेपर चढ़कर उन्होंने उधर झाँका। सचमुच उनकी आँखोंके सामने एक बहुत बड़ी पानीसे लबालब भरी हुई झील दिखाई दे रही थी।

ठाकुर भोलासिंह भी थोड़ी देर बाद अपने कुछ साथियोंको साथ लिए हुए वहाँ पहुँचे। जब उन्होंने अपने सामने अथाह जलसे भरी एक झील देखी तो उनके आनन्दका

ठिकाना नहीं रहा। यह आनन्द ठीक उसी तरहका था जैसे कोई राजा अपने पुत्रको किसी पड़ोसी राजाके साथ युद्ध करनेको भेजे और वह पुत्र उसको हराकर विजयका डङ्का बजाता हुआ घर लौटे।

आजतक बूढ़े ठाकुरने कभी माधवको मीठे शब्दोंसे पुरस्कृत नहीं किया था। जब वह उनके सामने पड़ता वे उसका तिरस्कार ही करते थे। पर आज उन्होंने बड़े प्यारसे माधवको गोदमें बैठाकर उसका मुँह चूमा।

थोड़ी देरमें सारा गाँव उस पहाड़ीपर इकट्ठा हो गया। माधवकी भूरि भूरि प्रशंसा की और ऐसे बुद्धिमान पुत्रको जन्म देनेके लिए ठाकुर और ठकुराइन दोनोंके भाग्यको सराहा।

अपनी इतनी अधिक प्रशंसा सुनकर माधव बहुत संकोचमें पड़ गया और राधाका हाथ पकड़कर धीरेसे वहांसे खसक गया।

जब दोनों भाई बहिन नदीके किनारे आकर बैठ गये तो राधाने पूछा—भैया उस दिन तुम कह रहे थे कि बाबू विश्वनाथजीने हम लोगोंके लिए दो चरखे भेजनेका वादा किया था, वह अभीतक तो नहीं आये ?

माधव—वे कह रहे थे गाँवके खातीके यहाँ लड़केका

विवाह था, इसलिये कुछ दिनका विलम्ब हो गया। सम्भव है आज वे दोपहरको जब झील देखने आवें तब चरखे भी साथ लेते आवें।

माधवकी धारणाके अनुसार दोपहरको श्रीविश्वनाथजी अपने उन्हीं इंजीनियर सहपाठीके साथ गाँवमें आ हाजिर हुए। ठाकुर भोलासिंहके साथ झील देखनेको उस पहाड़ीपर गये। माधव, राधा तथा गाँवके अन्य बहुतसे लोग भी साथ हो लिये।

विश्वनाथजीने देखा कि उनकी पहली धारणासे यह झील कहीं विस्तृत बनी है। अब उनके सामने यह प्रश्न था कि इसका उपयोग किस तरह करना चाहिये।

इंजीनियर साहबने राय दी कि जिस तरह नहरके पानीका निमन्त्रण करनेके लिए एक लोहेका फाटक लगाया जाता है, वैसे ही झीलमें भी लगाना चाहिये जो आवश्यकतानुसार पानी लेकर फिर बन्द कर दिया जा सके।

ठाकुर साहबसे पूछकर इसका प्रबन्ध कर दिया गया जिससे हजारों बीघा जमीन बड़ी आसानीसे सींची जाने लगी और सारा गाँव इससे निहाल हो गया। ठाकुर साहबके लाभकी तो बात ही क्या।

यह मण्डली जब गाँवको लौटी तो उसी समय एक आदमी

दो चरखे लेकर आता हुआ दिखाई दिया। यह दोनों चरखे राधा और माधवके लिये थे। उन्होंने बड़ी ही प्रसन्नताके साथ इन्हें अपनाया और रोज कमसे कम एक घण्टा कातना स्वीकार किया।

जो सज्जन चरखा लेकर आये थे, वे चरखा चलाना भी सिखलाते थे। उसी दिनसे यह दोनों चरखा चलाना सीखने लगे।

कपासमेंसे बिनौले अलग करना, धुनना, प्यौनी बनाना, चरखेकी माल बनाना, उसे छोटा बड़ा करना, तकवेमें यदि बल पड़ जाय तो उसे सीधा करना, परेतेपर सूत उतारना, सूतकी लच्छियाँ बनाना आदि जितने काम थे, उन दोनोंने खूब अच्छी तरह सीख लिये।

यद्यपि उन्होंने सिर्फ एक घण्टा रोज कातना स्वीकार किया था, पर अपने हाथके कते सूतका कपड़ा पहिननेकी उन्हें इतनी प्रबल उत्कण्ठा हो रही थी कि वे दिनमें कई घण्टे कातते ही रह जाते थे। इसका फल यह हुआ कि पहले-पहल चाहे सूत कितना ही मोटा झोटा क्यों न रहा हो, पर उन्होंने काफी मात्रामें कात डाला।

राधा और माधवकी देखा-देखी गाँवके अन्य बालक भी इस काममें अनुराग दिखाने लगे हैं, यहाँतक कि बहुत-सी

स्त्रियोंने भी इसे अपना लिया। देखते-देखते गाँवमें कई चरखे चलने लगे। जहाँ कामके समयमें भी आलस्यका साम्राज्य विराजता था, वहाँ अब चारों ओर परिश्रम साक्षात् रूप धारण करके गाँवमें एक अभूतपूर्व दृश्य उपस्थित कर रहा था।

———

# पञ्चम परिच्छेद

राधा और माधव अब दस और बारह सालके हो चुके हैं। साधारणतः यह अवस्था खेलने-कूदनेकी है। अवश्य ही माता-पिताके दबावसे पाठशालामें जाके कुछ लिखना-पढ़ना भी सीखना पड़ता है, पर यह बात गौण रहती है। यदि उनपर पूर्णरूपसे निगाह न रखी जाय तो पढ़नेके बदले उनका अधिकांश समय खेल-कूदमें ही बीतता है। पर खेलने-कूदनेका काफी अवकाश रहनेपर भी इन दोनोंका कामकी ओर ही अधिक ध्यान रहता था।

जबसे इन्होंने चरखा चलाना आरम्भ किया तबसे समयके मूल्यका इन्हें इतना अधिक ज्ञान हो गया है कि अब एक क्षण भी खाली रहना उचित नहीं समझते।

गत वर्ष इन्होंने इतना सूत काता कि उससे केवल इनके ही साल भरके वस्त्र तैयार नहीं हुए, बल्कि उससे घरके अन्य लोगोंके भी कुछ कपड़े बन गये। अब इनका सूत भी बारीक और समान होने लगा था। जब यह अपने हाथसे काते हुए सूतके वस्त्र पहनकर गाँवमें निकलते

थे तो लोगोंपर इसका काफी प्रभाव पड़ता था। अबतक इसी गाँवमें कई बार इसका प्रचार करनेके लिए कांग्रेस कार्यकर्त्ता आये थे, परन्तु उनका कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ा। लोगोंने इस कान सुना और उस कान निकाल दिया। पर अब इन बालकोंके थोड़ेसे परिश्रमसे जब इतना बड़ा काम होने लगा, तो लोग स्वतः ही इस ओर आकर्षित होने लगे।

इन दो वर्षोंके भीतर ही प्रायः सभी घरोंमें चरखे चलने लगे। ऐसा मालूम होता था कि कुछ ही दिनों बाद इस गाँवमें बाहरसे एक पैसेका भी कपड़ा नहीं आने पावेगा।

आजकल हर रविवारको चरखा कातनेका दंगल हुआ करता है। जिसमें स्त्रियाँ स्त्रियोंके साथ होड़ करती हैं और बालक बालिकाओंके साथ। पुरुष लोग भी कुछ दिलचस्पी लेने लगे हैं। अब यदि कोई बाहरका आदमी इस गाँवमें आकर देखे तो खेतके रखवालेको भी तकली या चरखा कातते पावेगा, चरवाहा भी अपने पशुओंको चराते समय सूत कातता दिखाई देगा। दोपहरकी धूप टालनेके समय तो अब आप बहुत कम लोगोंको खाली हाथ बैठा देखेंगे।

आज रविवारका दिन है। सब लोग चरखा कातनेमें

लगे हुए हैं। एक दूसरेसे होड़ बदकर चरखा कात रहे हैं, राधा और माधव भी अपने-अपने प्रतिद्वन्दियोंसे बाजी मारनेकी धुनमें लगे हुए हैं। चरखा कातते-कातते राधाने पूछा—क्यों भैया माधव, आज श्री विश्वनाथजी सन्ध्याको यहाँ आनेवाले हैं न ?

माधव—हाँ, आज वे यहाँ अवश्य आवेंगे और गत साल उन्होंने अपने गाँवको जिस खूबीके साथ आर्थिक परतन्त्रतासे मुक्त किया है, वह सब हाल सुनावेंगे।

राधा—मैंने सुना है कि अब उनके गाँवमें कोई भी कर्जदार नहीं रहा।

माधव—उस गाँवके लोग कर्जसे ही मुक्त नहीं हुए, सबके पास अपना कहने योग्य बहुत कुछ हो गया है। अब तो थोड़ी देर बाद वे आही जाते हैं। सारी बातें सविस्तार वे अपने मुँहसे कहेंगे।

चरखेका दङ्गल समाप्त हुआ। अच्छा सूत कातनेवालोंको पुरस्कार दिया गया। इस गाँवमें जुलाहोंका घर न होनेके कारण अबतक दूसरी जगहोंसे कपड़ा बुनवाकर मंगाना पड़ता था। पर इस सालसे यहाँके बालकोंने कपड़ा बुननेका काम भी सीख लिया है जिससे गाँववालोंको तो सुभीता हो ही गया है, कई आदमियोंके निर्वाहका साधन भी निकल आया है।

आरम्भमें तो हाथके कते सूतको बुनना इनके लिए बहुत ही कठिन काम दिखाई देता था, पर अब तो यह मजेमें काम कर लेते हैं।

सन्ध्या समय विश्वनाथजी अपने एक साथीके सङ्ग वहाँ आ उपस्थित हुए। आजकी सभा बहुत बड़ी नहीं थी, सिर्फ आस-पासके दो तीन गाँवके लोग जमा हुए थे। तो भी तीन-चार सौ आदमी एकत्र हो गये थे।

नियमानुसार सभाका कार्य आरम्भ हुआ। श्रीविश्वनाथजी कहने लगे—आज भारतके सात लाख गाँवोंकी जो दुर्दशा हो रही है, वह आप लोगोंसे छिपी नहीं है। मनुष्यको अन्य किसी तरहके सुभीते न मिलनेपर भी—पेटभर खानेको अन्न, बदन ढँकनेको वस्त्र तथा दो पाँव पसारने योग्य रहनेका घर यह तीन बातें तो चाहिए ही, पर आज अन्तिम दो बातोंको यदि गौण मान लें तो भी मनुष्य-जीवनका आधार भूत अन्नतक हमें भर पेट नहीं मिलता।

विद्वानोंने हिसाब लगाकर बतलाया है कि हमारे अन्दर प्रायः साठ प्रतिशत ऐसे लोग हैं, जिन्हें दोनों समयकी तो कौन कहे, एक बेला भी भर पेट खानेको नहीं मिलता।

वस्त्रके विषयमें तो हम पचहत्तर फीसदी नंगे कहे जा

सकते हैं। हमारे घरकी देवियोंतकके तन ढँकनेको लिये पूरा वस्त्र नहीं मिलता। उनमेंसे बहुतोंके पास तो सिर्फ एक ही वस्त्र रहता है, सो भी फटा-पुराना। ओढ़ने-बिछानेकी तो बात ही क्या? भर जाड़े उन्हें ठण्ढसे काँपते ही बीतता है। यदि कहीं लकड़ी या घास मिल गई तो कुछ ताप लिया, नहीं तो योंही दुःख पाकर उन्हें दिन काटने पड़ते हैं।

रही घरकी बात, सो तो आप देख ही रहे हैं कि किसीके पास कहनेके लिए घर है तो ऐसे कि न उनमें हवा आने-जानेकी गुंजाइश है और न वर्षा पानीसे बचने की ही। फिर वे छोटे भी इतने होते हैं कि उनमें रहनेवालोंको जरा भी आराम नहीं मिलता। इनके सिवा हममेंसे एक बहुत बड़ा समुदाय ऐसा भी है जिसके कहनेके लिए भी घर नहीं है। वह बिना घर-द्वारके ही इधर-उधर भटकता फिरता है।

यह तो हमारे गाँवोंकी बात हुई। पर इस समय संसारके अन्य भागोंमें क्या हो रहा, इसका हमारे ग्रामनिवासियोंको पता भी नहीं है। यूरोप, अमेरिका, जापान यहाँतक कि भारतको छोड़कर प्रायः सभी जगह गाँवोंमें काफी सुधार हो चुके हैं। वहाँके किसान बहुत ही खुशहाल हो गये हैं। उनके अपने पक्के मकान हैं, चौड़े रास्ते हैं, बिजलीकी रोशनी है, यहाँतक कि रेडियो

और टेलीफोनतक वहाँ पहुँच गये हैं। छोटे-छोटे गाँवोंमें भी वहाँ म्युनिसपैलिटियाँ बनी हुई हैं। पानी, सफाई, बालकोंकी शिक्षा तथा स्वास्थ्य आदिकी पूरी जिम्मेदारी उनपर रहती है।

हमें भी अब अपने पाँवोंपर खड़ा होना होगा। यह ठीक है कि इस समय प्रायः सारे भारतमें हमारी सरकारें ही शासन कर रही हैं। फिर भी अभी उनके ऊपर साम्राज्य शाहीका कठिन पंजा मौजूद है, उनका काम बहुत धीरे-धीरे होगा। इस बीचमें हमें अपनी ओरसे भी कुछ करते रहना चाहिये।

सबसे पहले हमें अपनी तीन प्रधान आवश्यकताओंको पूरा करना चाहिए। कमसे कम हमें भरपेट खानेको मिलना चाहिए। फिर वह चाहे रूखा-सूखा ही क्यों न हो। इसके बाद हमारे तन ढकनेका सवाल है। हमें सर्दी गर्मीसे बचनेके लिए आवश्यक वस्त्र भी मिलने चाहिए, हमारे सामने बढ़िया और कीमती कपड़ेका सवाल नहीं है। हमें तो अपनी मोटी खादी मिल जानी चाहिए हम उसीसे गर्मी और जाड़ा आनन्दपूर्वक व्यतीत कर लेंगे।

यदि हमें भरपेट खानेको और तन ढाकनेको वस्त्र मिल

जायँ तो फिर रहनेके घरका सवाल तो बहुत थोड़ेमें ही हल हो सकता है।

घर बनानेमें लगता ही क्या है? मेहनत तो हमारी निजकी है ही। फिर उसमें जितना सामान लगाना पड़ता है, वह सब हम अपने आप ही बना लेंगे। सिर्फ आवश्यकता है लोगोंको कार्य करनेकी पद्धति बता देने भरकी। यह सब मैं आपको आगे चलकर बताऊँगा।

———

# षष्ठ परिच्छेद

अब मैं आप लोगोंको अपने गाँवमें गत साल जो काम हुआ है उसका ब्यौरा सुनाऊँगा।

हमारे उस गाँवमें कुल १२५ घर हैं जिनमें एक सौ तो ब्राह्मण और अहीरों के घर हैं; बाकी पच्चीस हरिजनोंके हैं।

ब्राह्मणोंमें अधिकांशके अपनी जमीन है। अहीरोंमें कुछके अपनी है और कुछ दूसरोंकी जमीन जोतते बोते हैं।

सभी हरिजन ब्राह्मणोंके आश्रित हैं। वे सब उनके हल जोतने आदिका काम करते हैं। उनकी स्त्रियाँ खेतोंमें मजदूरीका काम करती हैं। कुछ सुअर आदि भी पालती हैं।

जिस दिन हमलोगोंने काम हाथमें लिया, उस दिन सारे गाँवकी स्थितिका हिसाब लगाया था। वहाँकी जनसंख्या चार सौ है जिसमें तीसके लगभग मनुष्य बाहर रहकर भिन्न-भिन्न तरहकी नौकरियाँ करते हैं। जो हर महीने मनीआर्डर द्वारा चार सौ रुपये गाँवमें भेजते हैं। इनमेंसे डेढ़ सौ तो तीन ही आदमियोंके यहाँ आते हैं। बाकी सत्ताईस आदमी ढ़ाई सौ भेजते हैं।

इन चार सौ रुपयोंमें से अधिकांश विवाह-शादी, मामलेमुकदमे और सूदमें ही पूरे हो जाते हैं। जो थोड़े बचते हैं उनका अधिकांश जमीन खरीदने और मकान बनानेमें पूरा हो जाता है।

उस समय की गणनामें सारा गांव पन्द्रह हजारका कर्जदार था। गांव की अधिकांश कमाई इन्हीं रुपयोंके सूदमें चली जाती थी। यहाँतक कि लोगोंके पास सालभर खाने तकका अन्न भी नहीं बच पाता था।

गांवमें दूधारू गायें और भैंसे भी बहुत थोड़ी थीं। यद्यपि वहाँ अहीरोंके काफी घर हैं, पर वे दूधका व्यवसाय नहीं करते। कुछ तो अपनी निजकी खेती बारी करते हैं और कुछ दूसरोंके यहाँ नौकरी करते हैं। जो कुछ गायें और भैंसे थी भी वह दूधकी दृष्टिसे नहीं रखी जाती थीं, उनसे सिर्फ बछड़े और गोबर प्राप्त करनेकी ओर ही उनका ध्यान रहता था। यदि किसीको मन तीस सेर दूधकी आवश्यकता आ पड़ती तो इतना भी वहाँ मिलना कठिन था।

साग-तरकारीका तो वे नाम ही नहीं जानते थे, फिर फलोंकी तो बात ही क्या की जाय? भले ही दो चार आदमी जो परदेशमें रह चुके हैं या अब रहते हैं, उनके यहाँ आम, अमरूदके कुछ पेड़ लगाये हुए हों। नहीं तो फसली आमोंको छोड़कर और कुछ नहीं मिलता।

न गांवमें लोहार था न खाती। जरा-जरा सी चीजके लिए शहरकी शरण लेनी पड़ती थी। कपड़ा सब बाहर से आता था। चरखा चलाना तो भूलसे गये थे।

गांवमें एक छोटी मोटी पाठशाला भी नहीं थी। जो दस पाँच लड़के पढ़ते थे, उन्हें दो तीन कोस रोज आना जाना पड़ता था। थोड़ेमें यही गांव की स्थिति थी।

हम लोगोंने अपनी एक व्यवस्था बनाई। जो लोग इस व्यवस्थाको मानेंगे उन्हें इसके द्वारा होनेवाले सभी लाभ प्राप्त हो सकेंगे। यह व्यवस्था एक पंचायतके अधीन रहेगी जिसके अधिकसे अधिक ग्यारह सदस्य होंगे—

सदस्य वे ही बन सकेंगे जो इस व्यवस्थाके अनुसार काम करना स्वीकार करेंगे।

( १ ) किसी विषयको लेकर एक दूसरेके विरुद्ध वे अदालत न जा सकेंगे।

( २ ) विवाह-शादी आदिमें पंचायत की व्यवस्थाके अनुसार ही खर्च कर सकेंगे।

( ३ ) अपने बालकोंको पंचायतकी व्यवस्थानुसार अवश्य शिक्षा देंगे।

( ४ ) नया कर्ज न ले सकेंगे।

( ५ ) प्रत्येक सदस्यको कोई न कोई हाथसे करने योग्य काम सीखना होगा

( ६ ) पंचायतके निर्णयके अनुसार अपने खेतोंको अदलना-बदलना होगा। अवश्य ही इस बदलौवलमें घटिया बढ़िया जमीनको समझकर ही बदला जायगा।

यह तो हुए व्यवस्थाके नियम। अब इसके सदस्योंको क्या क्या सुभीते मिलेंगे सो भी सुन लीजिये।

( १ ) जितना जिसका कर्ज़ है, सब चुका दिया जायगा। ऐसी रकमपर वसूलीके समय किसी तरहका सूद नहीं लिया जायगा।

( २ ) जिन खेतोंमें आबपाशीका साधन नहीं होगा, उनमें कूएँ बनवा दिये जायँगे। यदि पहलेके बने हुए कुओंमें पर्याप्त पानी न मिलता होगा तो उनमें बोरिंग करवा दी जायगी।

( ३ ) जिन गृहस्थोंके पास बैल न होंगे उन्हें खरीद दिये जायँगे।

( ४ ) प्रत्येक गृहस्थको दो-दो दुधारू गायें जिनका दूध आठ नौ सेरसे कम न हो, खरीद दी जायँगी।

( ५ ) घरमें जितने आदमी चर्खा कातनेवाले होंगे उन्हें चर्खा बनवा दिया जायगा।

( ६ ) जिन्हें बीजकी आवश्यकता होगी उन्हें अच्छा बीज दिया जायगा। बदलेमें उनकी फसलमेंसे उतना ही बीज ले लिया जायगा।

( ७ ) सहकार-समितिके ढङ्गपर उनकी सारी उपजकी चीजें अधिकसे अधिक प्राप्य मूल्यपर बेची जायँगी।

( ८ ) उनके व्यवहार योग्य वस्तुएँ थोकके भाव पर मँगाकर दी जायँगी।

( ९ ) बच्चोंकी शिक्षाका उचित प्रबन्ध कर दिया जायगा।

( १० ) अधिक मिट्टी खोदनेवाले लोहेके हल, बढ़िया खाद बनानेकी रीतियाँ, थोड़े समयमें अधिक रस निकालने वाले ईख पेरनेके कोल्हू आदि सभी आधुनिक ढङ्गकी कृषि को उन्नत बनानेवाली वस्तुओंका संग्रह करना और उनसे लाभ पहुँचाना।

( ११ ) अच्छे-अच्छे फलोंकी कलमें तथा नाना प्रकारकी तरकारियोंके उत्तम बीज देना।

( १२ ) बढ़िया नस्लके साँड़ रखना।

( १३ ) किसानोंके उपयोगी ऐसे घरेलू धन्धोंका प्रबन्ध

करना, जिनसे वे अपने अवकाशके समय काम करके कुछ उपार्जन कर सकें।

( १४ ) किसानोंको शिक्षित बनानेवाली उपयोगी पुस्तकोंका संग्रह तथा उन्हें अक्षर ज्ञान करानेका प्रबन्ध।

( १५ ) और भी अनेक ऐसे उपाय जिनसे उनकी मानसिक, नैतिक और आर्थिक उन्नति की जा सके।

इस योजनामें जो धन व्यय होगा, वह हमलोगोंके 'ग्राम उत्थान फण्डसे' लगाया जायगा और जैसे-जैसे सदस्योंकी आर्थिक अवस्था सुधरेगी, वैसे-वैसे पञ्चायतकी व्यवस्थाके अनुसार उनसे वसूल कर लिया जायगा। इसके लिये उनपर जरा भी दबाव न डाला जायगा।

जब यह व्यवस्था पहले-पहल आरम्भ की गई थी, तब हमें ग्यारहकी जगह सिर्फ तीन पञ्च प्राप्त हुए थे, जिनमें दो तो हम स्त्री-पुरुष और एक दयालु किसान रामलाल जिनके सरपर न तो किसी तरहका कोई कर्ज ही था और न उनके अन्नवस्त्रका ही अभाव था।

यह बात नहीं थी कि कोई पञ्च बनना नहीं चाहता था। पञ्च तो सारा गाँव बननेके लिये झगड़ रहा था पर सब नियम अपने लाभके होते हुए भी उनके बन्धनमें कोई बँधना नहीं चाहता था।

हमलोगोंने काम आरम्भ कर दिया। उसी दिनसे हमारे दोनों घरोंके प्रत्येक प्राणीने चर्खा चलानेका नियम किया। घरका काम हमलोग अपने हाथोंसे पहलेसे ही करते आ रहे थे। अदालत हमें जाना ही नहीं। न कर्ज ही लेना था। अभीतक गाँवके कोई पाठशाला नहीं थी। पर अन्नपूर्णादेवी थोड़ा समय बालकोंके पढ़ाने-लिखानेमें लगा देती थीं। इसलिये इस नियमका भी हम मजेमें पालन कर रहे थे। हमारे सामने तो विवाह शादीका कोई प्रश्न ही नहीं आया। हाँ, इसी बीच भाई रामलालके बड़े लड़केकी शादी आ पड़ी। उन्होंने गाँवके अन्य लोगोंकी आलोचनाकी कुछ भी परवाह न करके हमारे तीनों पञ्चोंकी रायके अनुसार बहुत ही सादगीसे विवाह कार्य सम्पन्न किया, जिससे उन्हें तो किसी तरहका कष्ट हुआ ही नहीं, साथ ही लड़कीवाला भी एक बहुत बड़ी कठिनाईसे बच गया।

यदि रामलाल यह काम उदारतापूर्वक नहीं करते तो वह इसी एक काममें तबाह हो जाते। पर इन्होंने साफ कह दिया कि हमें तिलक दहेज कुछ नहीं चाहिये, इसके लिये आप जरा भी कष्ट न उठावें। आपके पास जो कुछ सुभीते अनुसार लगानेको हो, वही हमारे लिये यथेष्ट होगा।

यह ठीक है कि हमारे गाँववालोंने इस सीधे-सादे विवाहकी काफी आलोचना की। लड़कीवालेके गाँवमें भी कुछ लोगोंने कई बातोंकी चर्चा की। पर विवाहके बादका परिणाम देखकर उनके मनोंपर इसका बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा। इसका प्रमाण इसीसे मिल जाता है कि उसी महीनेमें हमारी पंचायतमें एक सदस्य और शामिल हो गये। इनका नाम गोपालराम था।

गोपालरामकी स्थिति पहले बहुत अच्छी थी। इनके तीस चालीस बीघा जमीन थी, दो तीन जोड़ी बैल, कई गाय, भैंसे तथा एक घोड़ी भी थी। पर पड़ीदारोंसे मुकदमा लड़कर सारी जमीन रेहन हो गई। ऊपरसे तीन चार सौ रुपये कर्ज भी हो गये। इस समय सिर्फ एक बैल बचा है। सो भी इतना कमजोर है कि उसे नामभरको बैल कह सकते हैं। उनकी जोतमें सिर्फ तीन बीघा जमीन बची है। घरमें सात आठ प्राणी खानेवाले हैं। इस थोड़ी-सी जमीनकी आयसे उन सबका आधा पेट भी नहीं चलता।

गोपालरामकी जैसी दयनीय दशा हो रही थी, उसे देखते हुए उन्हें आरम्भमें ही हमारी पञ्चायतमें शरीक हो जाना चाहिये था, पर अन्य लोगोंकी देखा-देखी वे भी उससे दूर रहे। पर जब रामलालकी स्थिति दिन-दिन उन्नत होते देखी तो

इनका मन भी डोला और पञ्चायतकी शर्तें स्वीकार कर उसमें शामिल हो गये।

यह तो आप जानते ही हैं कि गरीबोंकी सेवाके लिये मेरे पास एक निधि मौजूद है। अवश्य ही उस निधिको बनाये रखकर उसके सूदसे सेवाकार्य चलानेकी शर्त है। पर इन दो सालोंमें इतना कम काम हुआ है कि अभीतक सूदका बहुत कम हिस्सा खर्च हुआ है।

पञ्चायतने तय किया कि गोपालरामका सब कर्ज चुका दिया जाय तथा उनके रेहनके खेतोंमेंसे भी पाँच बीघा जमीन छुड़ा ली जाय। उनके कर्जके रुपये और इन पाँच बीघा खेतोंपर ली हुई रकम, दोनों मिलाकर लगभग एक हजार रुपये हो रहे थे। इन रुपयोंमें आधेके करीब तो दो स्त्रियोंके थे जो वहाँ गाँवमें रहकर ही महाजनीका काम करती हैं। उनमें एक तो सीधी-सादी है, पर दूसरी बड़ी दबङ्ग औरत है। रात दिन जिन लोगोंका सूद खानेका ही व्यवसाय है, जो लोग असामियोंके साथ जरा भी रिआयत करना नहीं जानते उन्होंने तो सूदमें बहुत कुछ छूट दे दी, पर वह किसी तरह मानती ही नहीं थी। आखिर उससे कहना पड़ा कि यदि अदालतमें जाओगी तो भी तुम्हें इतना सूद नहीं मिलनेका। तब जाकर उसने रुपये लिये।

गोपालरामको पंचायतने दो अच्छे बैल तथा दो दुधारू गायें भी छः सौ रुपयेमें खरीद दी। उनके घरमें चार प्राणी चर्खा चलाने योग्य थे, उन्हें चर्खे दे दिये गये। इस तरह उन्हें आगे बढ़नेके लिए पूरा सामान मिल गया। वे भी तनमनसे अपनी स्थिति सुधारनेमें लग गये।

पंचायतके नियमानुसार उनको जितने रुपये दिये गये वह सारे बिना सूदके दिये गये। इसलिए अब कर्ज बढ़नेका तो कोई भय ही नहीं रहा। पहले दो महीनोंमें ही उन्हें काफी बचत हो गई, जिससे उन्होंने पचास रुपये पंचायतमें जमा करा दिये।

उनकी जमीनमें पहलेसे एक पुराना कुँआ बना हुआ था। पर उसमें पानी बहुत कम था। तीन-चार घण्टे मोट चलानेसे ही पानी टूट जाता था। उसे थोड़ा खुदवाकर बोरिंग करा दिया। इसमें कुल पचास रुपये खर्च हुए पर अब उसमें इतना पानी हो गया कि दिनभर मोट चलानेसे भी उसका पानी नहीं टूटता।

उनको पंचायतमें शामिल हुए अब एक साल हो गया है। अभी हालमें ही इनका हिसाब किया गया था। सिंचाईका सुभीता रहने और अच्छा बीज मिल जानेसे तीन बीघा ईखके खेतसे उन्हें तीन सौ रुपये मिल गये।

दोनों गायोंके दूध और घीसे भी उन्हें अढ़ाई सौ मिल गये। दोनों फसलोंसे पाँच बीघा जमीनसे उन्हें इतना अन्न मिल गया कि पूरे सालका खर्च चलाकर भी अभी दो महीनेके लायक उनके पास और बच रहा है।

पशुओंके चारेके लिये अपने कूएँके पास उन्होंने दस बिस्वामें अधिक बढ़नेवाली नेपियर घास बैठा ली है जो नई रहनेके कारण इस साल तो कम मिली है जिससे उन्हें भूसा आदि अपने पशुओंको देना पड़ा है, पर इस बरसातसे छः सात पशुओं योग्य उन्हें वही घास रोज मिलने लगेगी जो दो मासमें अपनी पूरी बाढ़पर पहुँच जाती है और बिस्वेमें पंद्रह मनसे भी अधिक मिलती है।

घरमें चार-चार चरखे चलते रहनेसे उनका अपने वस्त्रका काम तो चल ही गया, साथ ही कुछ सूत बेचना भी पड़ा है, जिससे साधारण नमक तेलका खर्च निकल आया।

हमारी देखा-देखी उन्होंने भी अपने पिछवाड़ेकी जमीन में कुछ फलोंके पेड़ लगा लिए हैं तथा साग तरकारी तो उनके यहाँ इतनी होने लगी है कि उसमेंसे उन्हें कुछ बेचनी भी पड़ती है।

घरके कई आदमी होनेके कारण उनका काम बहुत

अच्छी तरह चल रहा है। जो लोग कुछ दिन पहलेतक हाथसे काम करना भी पाप समझते थे, वे अब मधुमक्खीकी तरह हर समय कुछ न कुछ करते ही रहते हैं।

पंचायतने भी उनकी नेकनीयती देखकर उनकी बचत के रुपये उनके कर्जमें जमा न करके उन्हें दो तो गायें और खरीद दीं और बाकी रुपयोंसे उनके कुछ और खेत छुड़ा दिये।

इस तरह एक गृहस्थ जो दिन-दिन बरबादीकी ओर लुढ़कता जा रहा था, वह बहुत थोड़े समयमें ही अपना कर्ज चुकाकर अपनी जमीन वापस लेनेमें तो समर्थ हो ही जायगा साथ ही वह अपने पाँवोंपर खड़ा होकर दूसरोंको सहारा देनेके योग्य भी हो जायगा।

रामलाल भाईने तो इस एक सालमें ही अपनी चार गायें, दो बैल और कूएँमें कराई हुई बोरिंगके सारे रुपये अपनी कमाईसे पंचायतको वापस कर दिये हैं और आज वे हर हालतमें खुशहाल हैं।

इन दोनों गृहस्थोंको दिन-दिन उन्नति करते देखकर अन्य लोग जो अबतक हमारी इस नई योजनाका मजाक उड़ाया करते थे, एक-एक करके इसमें सम्मिलित होने लगे हैं। इस समयतक हमारी संख्या सात हो चुकी है। सब

मिलाकर अभीतक आठ हजार रुपये ट्रस्टके इसमें लग रहे हैं।

जैसे-जैसे सदस्य संख्या बढ़ रही है, वैसे-वैसे ही प्रत्येक सदस्यके ऊपर व्यय होनेवाली रकम भी कम होती जाती है, क्योंकि पहले सदस्योंके रुपये काफी संख्यासे लौटने लगे हैं।

अब आगे चलकर अपनी माल बेचनेकी योजना आपसे कहेंगे, जिसके प्रभावसे हमारी उत्पन्न की हुई वस्तुओंके पूरे दाम ही नहीं वसूल हो जाते, प्रत्युत माल बेचनेका खर्च भी उससे बहुत घट गया है।

———

# सप्तम परिच्छेद

अपने उत्पन्न किये हुए मालको बेचने और अपनी आवश्यकताएँ पूरी करनेकी वस्तुएँ खरीदनेके लिए हम लोगोंने एक सहकार-समिति बना ली है, वह सब किसानोंकी उपज को एक निश्चित मूल्यपर खरीद लेती है। अवश्य ही अपने व्यवहारके योग्य अन्न आदि रखकर बची हुई चीजें ही लोग इस संस्थाके हाथ बेचते हैं।

पहले तो हम लोगोंका ख्याल था कि हमारे यहाँ यदि अधिक संख्यामें दूध उत्पन्न होने लगेगा तो उसके बेचनेमें हमें काफी कठिनाई पड़ेगा। संभव है, उसका घी निकाले बिना उसे खपाना कठिन हो जायगा पर हम देख रहे हैं कि आज चार मनके लगभग दूध शहरमें भेजकर भी हम वहाँ की माँग पूरी नहीं कर सकते हैं। बात यह हुई कि शहरमें जो दूध बिकता है, उसमें पानी मिला रहता है पर हम लोगोंने ऐसा प्रबन्ध कर रखा है कि चाहे कितनी ही कठिनाइयोंका सामना करना पड़े, पर चीज शुद्ध और खालिस बेची जायगी। इसलिए आरम्भमें कुछ कठिनाई अवश्य हुई

पर अब वहाँ हमारी पंचायतके नामके साथ अच्छी वस्तुओंकी छाप लग गई है।

शहरमें साधारण दूधका चाहे जो भाव रहे, हमारे यहाँका पाँच रुपये मनमें बिक जाता है। खर्च बहुत कम पड़ता है। गाँवके मजदूर ही दूधके डिब्बे सरपर रख कर ले जाते हैं। शहर गाँवसे पाँच मील है। उन्हें रास्तेमें डेढ़ घण्टा लगता है। गाँवमें दूध दूहकर सब चार बजे सहकार समितिके दफ्तरमें आ जाता है। इसलिये शहर के गाहकोंके पास छः साढ़े छः बजे पहुँच जाता है। इसी तरह सध्या समय भी चार बजे ही दूध रवाना कर दिया जाता है।

सहकार-समितिमें दो भाई काम कर रहे हैं, एक गाँव पर रहता है, दूसरा शहरमें। पहले तो सिर्फ दूध ही जाता था, अब तो प्रत्येक वस्तु जो हमारे दैनिक खर्चसे अधिक होती है वहाँ चली जाती है।

मैं पहले कह चुका हूँ कि हमारे गाँवमें दूधकी तरह साग-भाजी की भी बहुत कमी थी। पर अब तो हमारे यहाँ हर मौसिमकी तरकारी उत्पन्न होने लगी है।

जिस जगह जो चीज बढ़िया उत्पन्न होती है, वहाँसे खोज-खोजकर अच्छे बीज मँगाये जाते हैं; खाद वगैरह

भी अच्छी दी जाती है। हमारे यहाँ सिंचाईका तो इतना उत्तम प्रबन्ध हो गया है कि यदि समयपर वर्षा न भी हो तो खेतीमें किसी तरहकी हानि होनेका भय नहीं रहता।

यद्यपि आरम्भमें घरका काम चला लेनेके बाद बहुत कम तरकारी बेचनेके लिए बचती थी। पर अब तो तीन चार गाड़ी जाने लगी है, इस तरह केले, पपीते आदि शीघ्र उत्पन्न होनेवाले फल भी कुछ-कुछ जाने लगे हैं। हमें आशा है कि इस सालके अन्ततक फलोंके लिए भी हमें गाड़ियोंकी आवश्यकता होने लगेगी।

यद्यपि सरकारके हस्तक्षेप करनेसे इस साल ऊखके दाम कुछ ठीक मिल गये पर हमने अपनी ऊख मिलोंको न बेचकर अपने यहाँ ही नई तरहकी भट्ठीके द्वारा गुड़ तैयार करा लिया—जिससे ऊखके जरिये हमें बहुत अधिक नफा हुआ। इस एक ही मदसे हमें इतना मिल गया कि हमारे सदस्योंमेंसे बहुतोंका ट्रस्ट-का हिसाब साफ हो गया।

चरखेने भी अपना हिस्सा अदा करनेमें कसर नहीं रखी। यद्यपि सालके आरम्भमें इस मदसे हमें अपने वस्त्रों भरका ही सूत मिला, पर सालका अन्त होते-होते हम इस योग्य हो गये कि लगभग दो सौ रुपयेकी खादी भी हमने शहरवालोंके हाथ बेची।

बस पहले साल हम इतना ही काम कर सके। इस साल गल्ला तो हमने एक पैसेका भी नहीं बेचा, क्योंकि हमारे यहाँ पहलेका तो कुछ जमा था नहीं, अब भविष्यके लिए थोड़ा बहुत बचा रखना पंचायतने आवश्यक समझा। इसलिये हमारे सदस्योंके पास जितना अन्न उनकी अपनी आवश्यकतासे अधिक बचा, उतना सहकार-समितिने खरीद कर अपने स्टाकमें रख लिया।

पंचायतकी इस तरहकी सर्वतोमुखी उन्नति देखकर गाँववालोंका भ्रम जाता रहा, फिर तो वे एकके बाद दूसरे पंचायतके सदस्य बनने लगे और कुछ ही दिनोंमें सदस्य संख्या पूरी हो गई।

अब पंच बननेकी गुञ्जाइश तो नहीं रही, पर दो सज्जनों को छोड़कर बाकी सारा गाँव पञ्चायतकी योजनाके भीतर आ गया।

जैसे-जैसे लोग पञ्चायतमें शामिल होते गये उनका देना-पावना साफ होता चला गया। उनके लिये बैल, गाय खरीदना, कुएँ बनवाना, बोरिंग करना, चरखे देना आदि जितने पञ्चायतके नियम थे पूरे होते चले गये, सालके अन्तमें हिसाब करनेसे मालूम हुआ कि सारे गाँव को अपने पांवोंपर खड़ होने योग्य बनानेमें ट्रस्टको कुल पन्द्रह हजार

रुपये खर्च करने पड़े, जिनमें अधिकांश तो पशु और कूओंके लिए ही लगे।

अबतक तो हम लोगोंके कामोंकी आलोचना करनेमें ही सारे गाँवका समय बीतता था, पर पंचायतकी छत्रच्छायामें आते ही वे भी सब हमारी तरह ही काममें जुट गये और गाँ की समृद्धि बढ़ानेमें लग गये।

अबतक सहकार-समितिकी चीजें सस्ती होनेपर भी पञ्चायत-के सदस्योंके सिवा अन्य लोग नहीं खरीदते थे, पर अब यह काम भी जोरोंसे चल गया। अबतक हमारी गाड़ियाँ आते समय खाली आती थीं, पर अब उनमें माल भरा आने लगा। यद्यपि इस तरह बाहरसे माल मंगाना हमारा अभीष्ट नहीं था, पर नये सदस्योंके लिये ऐसे बहुतसे सामानोंकी आवश्यकता थी, जो अभी तक हमारे गाँवमें कम उत्पन्न होते थे अथवा बिलकुल ही नहीं होते थे।

गाँ में रहकर भी हम लोगोंको सब चीजें शहरके भाव मिल रही थीं; फिर भी उनको बचतमेंसे भी हमें कुछ न कुछ और मिल जाता था। सहकार-समितिके विक्रय विभागका यह नियम बना दिया गया है कि काम करनेवालोंका वेतन, पूँजीका साधारण सूद तथा अन्य खर्चोंको बाद करके जो मुनाफा रहता है, वह सब माल खरीद करनेवालोंके अनुपात

से उन्हींमें बाँट दिया जाता है।

इस तरह अपनी आवश्यकताओंके अनुसार हमने प्रायः सभी अङ्गोंको पुष्ट करनेका प्रयत्न आरम्भ कर रखा है, जिससे गाँवकी सर्वतोमुखी उन्नति हो रही है। हमारा दैनिक या ब्याह-गर्मीका खर्च तो नियंत्रित हो ही गया है साथ ही प्रत्येक व्यक्तिके काममें जुटे रहनेसे आयकी मात्रा भी बढ़ गई है; यद्यपि जितनी मेहनत हम लोग करते हैं, उसका पूरा लाभ अभी हमें नहीं मिलता, उसका कुछ कारण तो हमारे नये होने का है और कुछ फल आदिके बगीचेकी आयका अभी बहुत कम होना है जो समयोपेक्ष है।

इतना सब होते हुए भी हमें एक बड़ी कठिनाईका सामना करना पड़ रहा है, जिससे हमारे काममें तो कुछ बाधा पड़ती ही है; साथ ही हमारे उद्देश्यके विरुद्ध हम लोगोंको अदालत-तक भी घसीटा जाता है। वह बात यह है कि हमारे दो भाई अभीतक हमसे अलग बने हुए हैं, जैसा कि आपसे पहले निवेदन कर चुका हूँ।

इनमें एक तो पंडित प्रयागदत्त हैं जो न तो कुछ पढ़े लिखे ही हैं और न किसी प्रकारका काम धन्धा ही करते हैं। उनका यही रोजगार है कि दो व्यक्तियोंको इधर-उधरकी सुनाके लड़ा देना और फिर अदालतमें ले जाकर दाने दानेके

लिए मोहताज बना देना। फौजदारीकी सारी धाराएँ इनकी जबानपर रहती हैं। क्या एक साधारण-सा सिपाही और क्या जिलेके बड़े-बड़े हाकिम, सबतक इनकी पहुँच है और सब इनकी खातिर करते हैं।

दूसरे सुक्खूसाहू हैं, जिनका काम एक रुपया देकर दस वसूल करना है; यह भी अदालतके कीड़े हैं। इनका जोर दीवानी अदालतमें है, जहाँसे यह कभी कोई मामला हारकर आये ही नहीं। यदि कोई गृहस्थ इनके फंदेमें एक बार फँस गया तो फिर उनके खेतोंकी तो बात ही क्या, थाली लोटेतक बिकवाये बिना पिंड नहीं छोड़ते।

इन दोनोंको गाँवके लोग अच्छी तरह जानकर भी इनके चंगुलमें फँसे बिना नहीं रहते। गरज बावली होती है, वह अच्छे बुरेको पहिचान नहीं करती। समयपर जो दो मीठे शब्द कह दे या कुछ सहारा दे दे फिर मनुष्य उसका हो जाता है।

जबसे पञ्चायतका जोर बँध गया है, तबसे इन दोनोंका ही रोजगार मंदा हो गया है। पहले तो कुछ दिन लोगोंको झूठ सच कहकर इन्होंने भरमाकर अपनी ओर मिलाये रखा, पर जब दूसरोंको लाभ करते देखकर एक-एक ग्राम निवासी पंचायतकी शरणमें आने लगे, तब इनकी दाल

गलती बन्द हो गई। यहाँतक कि जिन पण्डितजीके यहाँ दर-बार-सा लगा रहता था, वहाँ सिर्फ सूक्खू साहुके और कोई झाँकने भी नहीं जाता।

हाँ, तो जब पण्डितजीकी सब चालें बन्द हो गईं और लोगोंको लड़ानेका मौका न रहा तो पण्डितजी और साहुजी दोनोंने मिलकर एक झूठा मुकदमा गढ़ डाला। फिर तो थाने-दारके साथ सिपाहियोंका एक झुण्ड पहुँच ही गया। गाँवमें खासी धूम मच गई। इसको पकड़ा, उसकी तलाशी ली। उसको धमकाया, जब कोई भी उनसे नहीं डरा तो कई आदमियोंको वे गिरफ्तार करके ले गये।

थाने जानेपर भी उन लोगोंने किसी प्रकारकी कमजोरी नहीं दिखाई, दिखाते भी क्यों? उन्होंने कोई अपराध तो किया नहीं था, उन्हें यह भी विश्वास था कि अब हमारे ऊपर कोई जोर जुल्म नहीं कर सकता। यदि यह यहाँ कुछ कष्ट देंगे भी तो हम आगे चलकर साफ छूट जायँगे।

हमलोगोंके जामिन होनेपर भी जब दारोगाने उन्हें नहीं छोड़ा, तो एक अर्जी बड़े हाकिमके सामने दे दी गई, उन्होंने उसी समय मामला अपने हाथमें ले लिया। वे पंचायत की बात सुन चुके थे, इसलिए थोड़ेमें ही उन्होंने उन लोगोंको जमानतपर छोड़ दिया तथा अपने नीचेके अफ-

सरको इसकी जाँच करनेकी ताकीद कर दी।

नीचेवाला अफसर पण्डित प्रयागदत्तका मित्र था, यह मित्रता कोई सिद्धान्तकी नहीं थी, यह तो स्वार्थकी थी। पण्डित-जी बराबर इनकी भेंट पूजा करते रहते थे, सो भी अपने पाससे नहीं, लोगोंको झूठे सच्चे मामलोंमें पहले तो फँसा देते थे, फिर कुछ दे दिलाकर सुलह करा देते थे, इसमें अपना मतलब भी बना लेते थे और हाकिमोंसे भी राह-रस्म बनाये रखते थे।

इन अफसर महोदयने आगा देखा न पीछा, सदाकी तरह असामियोंको तङ्ग करना आरम्भ किया। यदि दूसरा मौका होता तो इनकी खूब छनती, पर इस बार गाँवसे तो कुछ मिलना था नहीं। सुक्खू साहु और पण्डितजीको निजमें ही घरसे निकालकर देना था, इसलिए पहले तो इन दोनों महाशयोंमें परस्पर खूब नोंक-झोंक हुई, बादमें अफसर महोदयने इन थोड़ेसे रुपयोंको देखकर काफी तोता चश्मी दिखाई; तो बकझककर अन्तमें सौदा पटाना ही पड़ा।

मामला खूब जोर शोरसे चला, इधर सारा गाँव एक मत था, न हमने वकील किया न मुख्तार, हम लोग निजमें ही अपना काम कर रहे थे। मामला बिलकुल झूठा था, सिर्फ पुलिसके

जोरसे इधर-उधरकी गवाहियाँ ठीक की गई थीं। एक दो पेशीमें ही सब पोल खुल गई। रङ्ग-ढङ्ग तो ऐसा मालूम होता था कि मजिस्ट्रेट साहबके पास भी कुछ सिफारिश पहुँची है, पर इसी समय कांग्रेसी मन्त्रिमण्डलकी ओरसे घूसखोरीकी जाँच हो रही थी, हलकेके कई दारोगा और ऊँचे अफसरोंके विरुद्ध अर्जियाँ आई हुई थीं, इसलिए उनकी सिफारिशोंके अनुसार न्याय करनेका साहस नहीं हुआ, पर मामला पाँच-सात पेशी चला दिया गया जिसका परिणाम भी उलटा ही हुआ, हम लोगोंकी तो सिर्फ कामकी कुछ क्षति हुई, क्योंकि उन सदस्योंकी घर गृहस्थीका काम सब गाववाले बाँटकर पूरा कर रहे थे, अदालती खर्च कुछ होता ही नहीं था। उधर उन दोनों महाशयोंको काफी खर्च करना पड़ रहा था, यहाँतक कि जिस दिन मामलेका फैसला हुआ, उस दिन उनके पासका सब कुछ तो स्वाहा हो ही गया था, जमीन-जोत भी बन्धक रख देना पड़ा था। हाकिमने सब असामियोंको निर्दोष कहकर छोड़ दिया।

यह अवस्था हो जानेपर भी उन्होंने कुछ दिन और गाँववालोंके साथ द्वेष भाव रखा। पर हम लोगोंने कभी उनका अनिष्ट करनेका प्रयत्न नहीं किया। इसके फल स्वरूप अब वे बहुत कुछ नरम पड़ गये हैं। सम्भव है दो चार दिनमें ही

वे भी पञ्चायतमें शामिल हो जायंगे।

अब हमारा विचार है कि आपके गाँवमें भी पञ्चायतका सङ्गठन किया जाय। यदि आप लोग स्वीकार कर लें, तो कलसे ही यह कार्य आरम्भ कर दिया जाय।

सबने एक स्वरसे इस प्रस्तावको स्वीकार किया। समय अधिक हो जानेसे आजका काम यहीं पूरा करके सब अपने-अपने घर गये।

———

# अष्टम परिच्छेद

राधा और माधवके गाँवमें श्रीविश्वनाथजीके आवागमनके कारण पहलेसे ही वातावरण बहुत कुछ सुधरा हुआ था। यह तो मानी हुई बात है कि जिस तरह बुराईको देखकर बुराई फैलती है, उसी तरह अच्छे कामोंके द्वारा भलाई भी अपना विस्तार करती रहती है।

जब पड़ोसके गाँवमें लोगोंको रात दिन आगे बढ़ते देखा तो यहाँके लोग भी स्वतः ही उनके बहुतसे गुण प्राप्त करने लगे। पिछले दिनों एक सज्जनके यहाँ लड़केका विवाह था। उन्होंने दहेजके लिये जरा भी चेष्टा नहीं की, इसके फल स्वरूप एक गरीब गृहस्थकी आबरू तो बच ही गयी साथ ही उन्हें भी बहूके रूपमें एक साक्षात् लक्ष्मी ही प्राप्त हो गयी जो हजारोंके दहेजसे भी अमूल्य वस्तु थी।

इसी तरह कुछ दिन पहलेतक जहाँ गाँवमें बच्चोंके पीनेके लिए भी दूध नहीं मिलता था, वहाँ अब मनों दूध होने लगा है।

खेतीबारीमें भी बहुत कुछ उन्नति हुई। मामले मुकदमे भी पहलेसे बहुत घट गये हैं, चरखे तो एक अच्छी संख्यामें चलने लगे हैं।

ठीक समयपर सभाका जमाव हुआ कि विश्वनाथजी भी आ पहुँचे उन्होंने पंचायतके नियम आदि सब समझा दिये। अपने गांवमें तो उनको पंचायत बनाते एक सालसे भी अधिक लगा था, पर यहाँ तो बहुत थोड़े समयमें ही सारा काम बन गया। पंच तो ग्यारह ही चुनने थे। यहाँ सारा गाँव पंच बननेके लिये तैयार था। जिन सज्जनोंके लिए अधिक राय मिली वे पंच चुन लिये गये।

गांवके कर्जकी फिहरिस्त बनायी गयी, बहुत थोड़ा देना था। सात आठ हजारमें ही सारा काम बन गया।

यहाँ कूएँ बनवानेकी आवश्यकता ही नहीं थी। पिछले दिनों नदीको रोककर जो बाँध बाँधा गया था उसीसे सारे गाँवकी आबपाशीका काम चल जाता था। पानी ऊँचेसे आनेके कारण सिंचाईमें बहुत सुगमता हो रही थी। माधवके अनुरोधसे बाबू भोलासिंहने पहले ही सिंचाईका शुल्क बहुत साधारण रखा था, अब तो उन्होंने यह सारी झील मय उस जमीनके पंचायतको भेंट कर दी। बाबू साहबकी इस उदारतासे लोगोंको बहुत आश्चर्य हो रहा था कि जो भोला-

सिंह एक रुपयेके लिए भी अदालत दौड़ पड़ते थे, वह आज इस तरह उदार कैसे हो गये। पर समयकी एक ही बात मनुष्यका कायापलट कर देती है इसका उनको ज्ञान नहीं था।

माधवके सद्विचारोंसे ही उसके पिता दिन-दिन सहृदय और दयावान बनते चले जा रहे थे। इससे यह बात नहीं थी कि उन्हें कुछ घटी उठानी पड़ती थी, उलटे वे नफेमें ही रहते थे। जहाँ पहले इतनी सम्पत्ति रहते भी नगद रुपयेका बचा लेना उनके लिए आकाश-कुसुम हो रहा था, वहाँ आज अपने आप ही चारों ओरसे रुपयोंकी वर्षा हो रही थी।

उनके सारे असामी खुशहाल हो गये थे। न लगानके लिए अदालत दौड़ना पड़ता था न पावनेके लिए ही किसीको तंग करनेकी आवश्यकता थी, सब घर बैठे अपने समयपर आ जाता था। इसका सबसे बड़ा कारण तो अदालतके खर्चसे पिंड छूट जाता था जो हर साल हजारोंकी संख्यामें बरबाद हो रहा था।

झीलके पानीने तो गांववालोंके साथ कामधेनुकासा उपकार कर रखा था। वहां न अनावृष्टिका डर था न बाढ़का, क्योंकि गांव ऊँचेपर रहनेके कारण आस-पासके

गाँवोंमें अथाह पानी चढ़ जानेपर भी यहाँ किसी बातका भय नहीं था।

यद्यपि सबका कर्ज चुकानेके लिए श्रीविश्वनाथजी तैयार थे, पर बाबू भोलासिंहजीने यह काम अपनी ओरसे कर दिया। जिन लोगोंके पास गाय, बैल आदिकी कमी थी, उनकी कमी भी पूरी कर दी गयी। श्रीविश्वनाथजीके गाँवसे चराई आदिका विशेष सुभीता रहनेसे पशुओंके लिए यह स्थान बहुत ही अनुकूल सिद्ध हुआ। जो गाय उस गाँवमें आठ सेर दूध देती, वही यहाँ आकर दस सेर देने लग जाती थी; यदि वही फिर दूसरी जगह ले जाई जाती तो उतना दूध नहीं देती थी। इसका एक खास कारण था। यहाँकी पहाड़ी जमीनमें एक प्रकारकी घास उत्पन्न होती थी जो बढ़ती तो कम थी, पर उसके खानेसे पशुओंका दूध खूब बढ़ जाता था। इसलिए थोड़े दिनोंमें ही यहाँका दूधका व्यवसाय बहुत तरक्की कर गया।

आसपासके शहरोंमें बेचकर भी काफी दूध बच जाता था। इसलिए श्रीविश्वनाथजीकी सलाहसे बाबू भोलासिंह जीने माधवको एक मक्खन तैयार करनेका कारखाना खुलवा दिया, जिसके द्वारा मक्खन तैयार करके दूर-दूरके शहरोंमें भेजा जाने लगा।

आरम्भमें तो दाम कुछ कम मिले, पर जैसे-जैसे लोगोंमें इसका व्यवहार बढ़ा, वैसे-वैसे इसने अपना एक खास स्थान बना लिया, जहाँ पहले यहाँका मक्खन दो आने सेर कममें बिकता था, वहाँ अब दो आने अधिकमें बिकने लगा।

यहाँके फलोंका व्यापार भी अच्छा निकल आया, सेव और अंगूर तो यहाँके इतने चलने लगे कि उनकी माँग पूरी करनी भी कठिन हो गई। गाँवके नीचे जितनी खेतीकी जमीन थी, उसमेंसे सिर्फ गाँवकी खपत भरके अन्नके लिए रखकर बाकी सारीमें इन्हीं दोनों चीजोंके बाग लगा दिये गये। मक्खन और फलोंकी आमदनी से ही यह गाँव इतना सम्पन्न हो गया कि ऐसा मालूम देने लगा, मानो यूरोपका कोई उन्नतिशील गाँव है।

इन दो चीजोंके व्यवसायके साथ एक तीसरा व्यापार और भी धीरे-धीरे तरक्की कर रहा था। वह व्यापार था यहाँकी गाय और बैलोंका। यद्यपि आरम्भमें जितने बच्छे-बच्छियाँ यहाँ उत्पन्न होते थे वह यहीं काममें ले लिये जाते थे, पर कुछ साल बाद ही इनकी संख्या इतनी अधिक हो चली कि बाहर बेचनेकी आवश्यकता आ पड़ी।

श्रीविश्वनाथजीके गाँवमें भी पशुओंकी अवस्था खूब अच्छी हो रही थी। वहाँ फलोंमें अमरूदकी खेतीने काफी तरक्की कर ली थी। वहाँके अमरूद इतने अच्छे और बड़े होने लग गये थे कि गत साल सारे यू० पी० प्रान्तमें यहाँके अमरूदोंका अव्वला नम्बर रहा। उनमें भी श्रीविश्वनाथजीकी कन्या चम्पाने सबसे ऊँचा पुरस्कार पाया। यद्यपि वह इस समय कुल दस सालकी हुई थी पर इस काममें अर्थात् फलोंकी खेतीमें उसे इतना अनुभव हो गया था कि बड़े-बड़े लोगोंको उसकी राय माननी पड़ती थी।

माधव मक्खनके काममें लग गया था, तो राधाने भी अपने लिए एक नया धन्धा तजबीज कर लिया था। श्रीविश्वनाथजी जब कालेजमें पढ़ते थे तब उन्होंने फलोंको अधिक दिनतक सुरक्षित रखनेकी क्रिया सीखी थी। राधाके गाँवमें सेवोंकी अधिक उत्पत्ति देखकर उन्होंने राधाको यह क्रिया सिखा दी, वह बहुत थोड़े दिनोंमें इस कार्यको खूब अच्छे ढंगसे करने लगी। सेवोंकी फसलके दिनोंमें वह डिब्बोंमें भरकर इन्हें रख लेती, जो हवा बंद कर देनेसे महीनों उसी अवस्थामें रखे ज सकते थे। बादमें सेवकी मौसम चली जानेपर वह उन्हें शहरोंमें बेच लेती। यह काम भी थोड़े परिश्रमके बाद चल निकला।

इन कामोंमें गाँवके नवयुवकोंका ज्ञान बढ़ानेकी काफी सहूलियत रखी गयी थी, साथ-ही-साथ उन्हें उनके परिश्रमके अनुसार पारिश्रमिक भी मिलता था। इस समय इन दोनों गाँवोंमें ऐसा एक भी व्यक्ति नहीं था जो अपना थोड़ासा समय भी आलस्यमें बिताता हो। यहाँ तो सब मधुमक्खीकी तरह हर समय कुछ-न-कुछ करते ही दिखाई देते थे।

जैसे-जैसे इधर तरक्की हो रही थी, श्रीविश्वनाथजीका दायरा भी बढ़ता जाता था। इस बीचमें उन्होंने और भी चार-पाँच गाँवोंमें पंचायतें स्थापित कर दी थीं। अब नई पञ्चायतें बनानेमें दिन-दिन उन्हें सुभीता होता जाता था। औसतसे रुपये भी कम लगाने पड़ रहे थे तथा समझाने-बुझानेकी बहुत कम आवश्यकता रह गयी थी। लोग अपने आप ही सब ठीक कर लेते और उनको बुलाकर उनके आदेशानुसार काम आरम्भ कर देते थे।

इन नये गाँवोंमें से एक बलदेव नामका नवयुवक था। इस समय उसकी अवस्था लगभग १६ साल की थी। यद्यपि वह बहुत पढ़ा-लिखा तो नहीं था पर बातकी तहतक पहुँचनेकी उसमें खासी योग्यता थी। उसका पिता बहुत ही गरीब था। पाँच छः सौ रुपयेका कर्जदार भी था,

कमानेवाला सिर्फ वही था। खानेवाले, बलदेव सहित चार लड़के, दो लड़कियाँ, विधवा माँ और एक विधवा भाभी भी थी। वे दोनों स्त्री पुरुष तो थे ही।

अबतक तो बलदेव पिताको खेती-बारीके कामोंमें थोड़ा बहुत सहारा दे दिया करता था, बाकी सारा दिन यों ही इधर-उधर करके बिताता था, पर जबसे यहाँ पंचायतकी स्थापना हुई और उसके नियमोंके अनुसार कार्य आरम्भ हुआ, तबसे वह बहुत मन लगाकर घरका सब काम देखने लगा। उन लोगोंकी जितनी जमीन बंधक पड़ी थी वह सब छूट जानेसे उनकी खेतीका काम बड़े पैमानेपर होने लगा, पहले तो खेतोंमें सिंचाईका प्रबन्ध न रहनेसे उपज बहुत कम होती थी पर अब पंचायतकी सहायतासे उनकी चालीस बीघा जमीनमें चार कुएँ बन गए, इन कूओंमें बोरिंग कराकर इतना पानी कर दिया गया कि रात-दिन पानी लेनेपर भी नहीं टूटता।

बलदेवने देखा कि चारों ओर वृक्षोंके लिए कलमोंकी माँग बढ़ रही है। इसलिये यदि एक अच्छासा जखीरा खोल दिया जाय तो कलम और बीज बेचकर खूब लाभ उठाया जा सकता है।

श्री विश्वनाथजीकी रायसे उसने इस काममें विशेषता प्राप्त कर ली। जहाँ अच्छे जखीरे चल रहे थे, वहाँ जा जाकर उसने इसका अनुभव प्राप्त किया, यहाँतक कि एक महाशय अपने यहाँ किसीको प्रवेशतक न करने देते थे, वहाँ बलदेवने बहुत थोड़े वेतनपर - नाममात्रके वेतनपर काम पकड़ लिया और पूरा परिश्रम करके मालिकको भी प्रसन्न कर लिया और आप भी बहुतसी उपयोगी बातें सीख आया।

आते समय मालिकने रखनेका बहुत प्रयत्न किया, वेतन भी कसके देना स्वीकार किया, पर इसका मतलब तो दूसरा ही था, इसलिए वहाँ न ठहरकर अपने खेतपर चला आया और हर तरहकी कलमें बैठानेका कार्य करने लगा।

यद्यपि आरम्भमें दो तीन साल इस काममें जितना परिश्रम और व्यय करना पड़ा, उसको देखते लाभ कुछ भी नहीं हुआ, पर बादमें तो वह छोटा-सा गांव अच्छे पेड़ पौधोंके लिए विख्यात हो गया

बलदेवने सिर्फ फलोंके वृक्षोंके बीच और कलमें ही नहीं तैयार की, उसके जखीरेमें हर तरहकी तरकारी, फूलोंके वृक्ष, बङ्गले सजानेके लिये भाँति-भाँतिकी बेलें तथा नाना प्रकारके रंगीन पत्तों और सुगन्ध फैलानेवाले पौधोंकी कलमें तथा बीज भी मिलने लगे।

इधर बीज, कलम और पौधोंसे तो लाभ होता ही था, इसके सहारे उनके यहाँ एक अच्छा बाग भी लग गया जिससे उनको काफी लाभ होने लगा। यहाँतक कि उनकी सारी जमीन अब इसी काममें बझ गई और उनकी आजीविकाका यही प्रधान साधन बन गया।

इस तरह थोड़े दिनोंमें ही इस ओरके सैकड़ों गाँवोंमें पंचायतें स्थापित हो गयीं और उनके द्वारा धड़ल्लेसे काम होने लगा। जैसे-जैसे पंचायतें बढ़ती गयीं, संगठनका कार्य भी विस्तार पकड़ता गया।

जिन जगहोंमें भूख और काहिलीका साम्राज्य जमा हुआ था, वहाँ अब चारों ओर परिश्रम और उद्योग मूर्तिमान होकर काम कर रहा था। देखनेवालोंको आश्चर्य हो रहा था कि कुछ साल पहले जहाँ रुपयेके दर्शन होने भी दुर्लभ हो रहे थे, वहाँ आज धनकी नदीसी बह रही है। चाहे जिस गाँव में चले जाइए, वहाँ आप एक भी ऐसा आदमी न पायेंगे जो किसी समय भी हाथपर हाथ रखे उदास बैठा दिखलायी देता हो।

गाँवोंमें जिस एक बातकी कमी थी, वह इस नये उद्योग से पूरी हो गयी। चाहे ग्रामनिवासियोंका लक्ष्य पैसा इकट्ठा करना न हो और उनका ध्यान विलासिताके साधन पूरे करनेकी

ओर भी न हो, पर परिश्रमका बदला यदि पूरा मिलने लगे तो सम्पत्ति तो हाथ बाँधे प्रत्येक द्वारपर अपने-आप ही खड़ी दिखायी देने लगती है।

हमारे प्राचीन भारतमें अतिथि-सेवाका सबसे अधिक महत्त्व समझा जाता था। जब भारत सम्पन्न था, तब तो अपना सर्वस्वतक अतिथिको अर्पण कर दिया जाता था, पर वह अतिथि भी तो भारतीय ही होता था, अथवा कोई विदेशी भी होता था तो वह भी अपनी साधारण दैनिक आवश्यकताओंको पूरा करके गृहस्थकी इस महत्ताका आदर ही करता था। पर पराधीनताके कारण जब वह रिक्त हस्त हो गया, तब भी उसने अपने इस नियमको नहीं भुलाया, जिसके फलस्वरूप स्थान-स्थान पर मन्दिर, धर्मशालाएँ और अन्नसत्र आज भी दिखाई दे रहे हैं।

एक दिन श्री विश्वनाथजीने अपने इन नवनिर्मित उत्साही ग्रामोंके सारे नवयुवकोंकी एक सभा बुलानेका निश्चय किया, जिसमें खासकर दो बातोंपर विचार करना था। एक तो एक ऐसा सुदृढ़ स्वयंसेवकोंका दल स्थापित करना था, जो हर समय निःस्वार्थ भावसे जनसेवा करनेके लिए तैयार रहे। दूसरा यह काम करना था कि धर्मके नामपर—जनसेवा के लिए, जनताका जो धन महन्तों और पुजारियोंको

अर्पण किया गया था, उसका पूरा-पूरा सदुपयोग हो।

इस समयतक जिन सैकड़ों गांवोंमें यह नया उद्योग चल रहा था, उनमें बसनेवाले सभी नवयुवक इस सम्मेलनमें आमंत्रित किये गये थे। इसलिये हजारोंकी संख्यामें लोगोंके आनेकी आशा थी।

जिस स्थानपर यह सभा करनेका आयोजन किया गया था, वहाँ न तो कोई पंडाल ही बनाया गया था और न किसी तरहकी कोई विशेष तैयारी ही की गई थी।

प्रत्येक दो गाँवोंके बीचकी जो जमीन पशुओंके चरनेके लिये गोचर भूमि करार दी गयी थी, जहाँ स्वच्छ पानीका एक जलाशय और थोड़ी-थोड़ी दूरपर हरे वृक्षोंके कुञ्ज थे। ऐसी ही एक खुली जगहपर यह अनुष्ठान करना निश्चित किया गया था।

आज एक साधारणसा सम्मेलन करनेके लिए भी हजारों रुपयोंकी माँग करनी पड़ती है और सैकड़ों आदमियोंको महीनों पहलेसे रात दिन उसकी तैयारियोंमें लगे रहना पड़ता है। पर यहाँ न तो एक पाई किसीसे माँगी गयी और न किसी-को अपना काम छोड़कर समय ही लगाना पड़ा। एक सप्ताह पहले, आठ आदमियोंको हद बाँधकर निमंत्रण देनेके लिये भेज दिया गया, तब कहला दिया गया कि सभा सिर्फ एक

ही दिनमें ख़तम कर दी जायगी। इसलिए किसी तरहका सामान साथ लेनेकी आवश्यकता नहीं है। सभा दिनमें ठीक बारह बजे आरम्भ करके सन्ध्या ५ बजेके पहले ही ख़तम कर दी जायगी। दिनका भोजन गाँववालोंकी ओरसे ही करानेका प्रबन्ध किया गया है।

इसके लिए भी बड़ा सीधा सा रास्ता सोच निकाला गया था कि प्रत्येक गृहस्थ दस-दस, बारह-बारह आदमियोंके भोजनका प्रबन्ध कर दे, जिससे हजार बारह सौ आदमियों का सहज में ही सत्कार भी हो जाय और किसी तरहकी झंझट भी न उठानी पड़े।

---

# नवम परिच्छेद

आज ही गाँवोंके नवयुवकोंके सम्मेलनका दिन है। गोचर भूमि खूब झाड़-बुहारके साफ कर दी गयी है। अगहनका महीना होनेसे खुली जगहपर बैठनेमें किसीको धूप या जाड़ेका कष्ट होनेका भी भय नहीं था।

रस्सी बाँधकर अलग-अलग गाँवोंके लिए स्थान बना दिया गया। बीचमें एक ऊँचीसी जगहपर रस्सीका एक गोल घेरा देकर वक्ताओंके लिए स्थान बना दिया गया। हरी-हरी घासका बिछावन और शरद ऋतुके स्वच्छ आसमानका चँदवा यही इस सभाकी सजावट है, जिसमें समानताका भाव कूट-कूट कर भरा हुआ है।

सभाके समयसे पहलेही लोग आने लगे और निश्चित कार्य-क्रमके अनुसार गाँवके नवयुवक अपने-अपने यहाँ आगन्तुकोंको ले जाकर भोजन कराने लगे। न कहीं भभ्भड़ था, न कुछ अस्वाभाविकता; काम इस प्रकार हो रहा था, मानो कोई नयी बात ही नहीं है।

समयसे पहले ही सबका भोजन हो चुका। सब

अपने-अपने निश्चित स्थानपर जा बैठे। किसी गाँवसे दस किसीसे बारह ऐसेही लोग आये थे। यह बात नहीं थी कि प्रत्येक गांवमें इतने ही नवयुवक थे, पर सबने अपने-अपने गांवके प्रतिनिधि रूपमें अपने यहांके विशेष उद्योगी लोगों-को ही भेजा था।

श्रीविश्वनाथजीपर सबकी समान रूपसे श्रद्धा होनेके कारण, सर्व-सम्मतिसे वे ही अध्यक्ष चुने गये।

उन्होंने सभाका कार्य आरम्भ करनेके पहले भोजनके अपने नये प्रबन्धके लिए सबसे क्षमा माँगते हुए कहा कि हम लोगोंने आपको साधारण दाल-रोटी खिलाकर अपने विशेष प्रेमका परिचय देनेकी जो धृष्टता की है, उसके लिये आपसे क्षमा चाहते हैं। पर इस साधारण दाल-रोटी के पीछे जो विशेषता छिपी हुई है, वह यह है कि यह चीज सदा निभने वाली है। यदि हम इसके बदलेमें हजारों रुपये चन्दा बटोरके बढ़िया-बढ़िया मिठाइयां बनवाके आपको खिलाते तो अवश्य आजकलकी प्रथाके अनुसार वह ठीक समझा जाता, पर इससे कोई लाभ नहीं होता, तथा भविष्यके लिये इसी तरह सबको खर्च करना पड़ता, जैसे आजकल शहरोंमें सभा-कान्फ्रेंसोंमें पांच सात सौ आदमियोंके जमावमें भी हजारों रुपये स्वाहा हो जाते

हैं और फिर हर एक जगह ऐसे उत्सव होनेका अवसर ही नहीं आता।

जैसे आपने यहाँ आकर सीधा-सादा भोजन किया है, वैसा भोजन कराके आपमेंसे कोई भी किसी ग्राममें इतने ही आदमियोंको बुलाकर मजेमें सभा सम्मेलन करा सकता है।

श्रीविश्वनाथजीने कहा कि अब मैं आजकी सभाका उद्देश्य आप लोगोंके सामने रखना चाहता हूँ।

पहला प्रश्न हमें यह हल करना है कि हम अपने नवयुवकों-का एक सुदृढ़ संघटन करें। यह ठीक है कि हमारी नयी प्रगतिने आज हमें इस योग्य बना दिया है कि हम अपने जीवनकी मुख्य तीनों आवश्यकताओंको बड़े मजेमें पूरी कर रहे हैं—अर्थात् हमें दोनों वक्त भरपेट खानेको मिल जाता है। सरदी गर्मीसे बचनेके लिए हमें अपना तन ढाँकनेको पूरे वस्त्र भी मिल जाते हैं, तथा दिनभरकी मेहनतके बाद पाँव फैलाकर सोनेको अपनी झोंपड़ी भी हो गयी है। इतना ही नहीं, हमारे पास अपनी कहने योग्य अन्य ऐसी वस्तुएँ भी हो गयी हैं, जिनके प्रभावसे देशको आगे बढ़ानेके काममें भी हम कुछ कर रहे हैं तथा अन्य दो भाइयोंकी आवश्यकताओंको पूरी करने योग्य भी हो गये हैं।

यह सब होते हुए भी अभी हमें कई ऐसे कार्य करने हैं, जो बिना हमारी एकताके पूरे नहीं हो सकते और वह एकता नियमपूर्वक संघटन किये बिना कायम कैसे हो सकती है? इसलिए अब हमें एक स्वयंसेवक दलका निर्माण करना आवश्यक हो गया है। यह दल ऐसा होना चाहिए जो समय पड़नेपर अपने तन, मन और धनसे जन-सेवा करनेके लिये तैयार रहे।

गत सालकी बात है, हमारे ही पड़ोसके गाँवोंमें सरयू-जीमें बाढ़ आ जानेके कारण बहुतसे गाँव जलमग्न हो गये थे और हजारों मनुष्य और पशु अकाल ही काल ग्रसित हो गये थे। लाखों रुपयोंकी फसल नष्ट हो गयी थी, वह अलग। ऐसी दैविक दुर्घटनाओंके समय यदि आरम्भमें ही सावधानीसे काम लिया जाय तो इतना अधिक अनिष्ट न होने पावे।

स्वयंसेवक गण जिनकी आँखें हर समय हर बातको देखने और समझनेके लिये खुली रहती हैं, नदियोंके पानीको अस्वाभाविक रूपसे बढ़ते देखकर ही जनताको इसकी सूचना देना आरम्भ कर सकते हैं। इसी तरह अनावृष्टिके समयमें भी जहाँ अच्छी फसल हुई हो, वहाँ वालोंकी सहायतासे अकाल-पीड़ितोंको बचा सकते हैं।

प्लेग, हैजा, विसूचिका आदि संक्रामक रोगोंके फैलते ही उससे बचनेके उपायोंका लोगों में प्रचार कर सकते हैं तथा इनसे पीड़ितों की सहायताका उचित प्रबन्ध कर सकते हैं। इन सब बातोंके सिवा ऐसे बहुतसे दैनिक काम भी हैं जिनसे जनताको लाभ पहुँचानेके लिये भी स्वयंसेवकोंकी आवश्यकता रहती है। जैसे लोगों में गाँवों और घरोंमें सफाई रखनेका प्रचार, गोबर और कूड़ा करकटका गाँवके बाहर गढ़ोंमें बन्द रखनेकी रीति बताना, जिससे गाँवकी आरोग्यता तो सुरक्षित होती ही है, साथ ही उससे सुन्दर खाद भी मिलनेका प्रबन्ध हो जाता है। बालकोंको समयपर नहला-धुलाकर साफ-सुथरा रखना तथा कमजोर बालकोंको दूध पिलाकर अकालमें मृत्यु-मुखसे बचानेकी रीति बताना आदि ऐसे बहुतसे जन-सेवाके कार्य हैं। ऐसे कुछ दोष तो अज्ञानताके कारण और कुछ प्राचीन अन्धविश्वासके कारण ग्रामीण जनतामें फैले हुए हैं।

अब आप लोगोंको अपने-अपने ग्राममें इस तरहके कामोंमें जनताकी सेवा—और वह सेवा बिलकुल निःस्वार्थ करनेके लिये होनी चाहिए। एक-एक दल स्वयंसेवकोंका बनावे, जिसका एक मुखिया हो। प्रत्येक दस सेवकोंपर एक-एक नायक हो, नायक वही बनाया जाय जो स्वयंसेवकोंमें सबसे अधिक सेवा करने-

वाला हो और मुखिया वह बनाया जाय जो इन नायकोंमें सबसे होशियार और बुद्धिमान हो। साथ ही सेवाकार्यमें पटु तो होना ही चाहिए।

ऐसे पाँच गाँवोंके पाँच मुखियोंपर एक सहकारी प्रधान नियुक्त किया जाय, जो समय समयपर गांवोंका दौरा करके मुखियोंको उचित परामर्श देता रहे।

इस तरहके बीस सहकारी प्रधानोंपर एक प्रधान बनाया जाय जो अपनी हदके एक सौ ग्रामोंके सुख-दुःखकी पूरी जिम्मेदारी ले सके और जिसकी सेवाओंसे जनता पूर्ण जानकार हो। ऐसा पद किसी अनुभवीको ही देना उचित है, क्योंकि जो सोते जागते अपने कर्तव्य पालनमें जरा भी त्रुटि न आने दे, वही इस पदके योग्य हो सकता है।

इस तरह सारी बातोंको समझाकर श्रीविश्वनाथजीने प्रत्येक ग्रामके युवकोंसे अपना एक मुखिया चुननेका अनुरोध किया। थोड़े समयके सलाह मशविरेके बाद प्रत्येक ग्रामसे एक-एक नाम उनके पास आने लगा और कुल दस बारह मिनटमें सबके नाम उनके सामने आ गये।

श्रीविश्वनाथजीने कहा कि प्रत्येक मुखियाको चाहिये

कि आगामी पन्द्रह दिनके भीतर अपने यहाँके अधिकसे अधिक युवकोंको स्वयंसेवक बनावे तथा प्रत्येक दस स्वयंसेवकोंपर एक-एक नायक चुनके उनकी नामावली यहाँ भेज दें। जिससे दूसरी सभा करके जिसमें सिर्फ मुखिया ही बुलाये जायँगे, उपप्रधानोंका चुनाव कर लिया जा सके।

यह विषय तय हो जानेके बाद अब दूसरा विषय हाथमें लेते हुए श्रीविश्वनाथजी कहने लगे कि प्राचीन कालसे हमारे यहाँ यह नियम चला आ रहा है कि हमारे धार्मिक भावोंकी रक्षा करनेके लिए कुछ ऐसे महानुभाव नियुक्त रहें, जो संसारसे विरक्त होकर भगवानकी सेवा तथा ध्यान करते हुए जनताकी धार्मिक मनोवृत्तिको बराबर जगाए रखें तथा इस के लिए निरन्तर उद्योग करते रहें।

पहले तो यह काम उन ऋषि-महर्षियोंके जिम्मे था जो वानप्रस्थी होकर गाँवोंसे बाहर वनोंमें रहा करते थे। बादमें यह कार्य उन साधु-सन्तों और महंतोंके ऊपर छोड़ा गया जो अपना सर्वस्व त्यागकर जन-सेवाका ही व्रत ले चुके थे। यह लोग भी गाँवोंके बाहर ही रहकर जनहितमें लगे रहते थे।

ऐसे साधु या महन्तोंका गांवकी ओरसे नियत किये

हुए अन्न-वस्त्रसे निर्वाह होता था। साथ ही दूर-दूरसे आये हुए संत-साधुओंका आदर-सत्कार करनेका काम भी इन्हींके ऊपर रहता था।

उन दिनों तो यह लोग संग्रह करनेके पक्षपाती न रहनेके कारण रोजके व्ययके योग्य ही सामान रखते थे, यहाँतक कि अधिक आया हुआ सामान उसी समय लौटा देते थे। पर आगे चलकर यह नियम बदल गया और गृहस्थोंकी तरह यह भी संग्रह करने लगे, जिसके फलस्वरूप योग्य अधिकारियोंके बदले निम्नतर श्रेणीके लोग ही अधिकारी बनने लगे और गृहस्थोंकी तरह वे भी खेत जमीन खरीद-खरीदकर धनवान बनने लगे। उसीका परिणाम यह हुआ कि आज यह अरबोंकी सम्पत्तिके अधिकारी बन गये हैं। नाम और वेशसे तो आज भी यह साधु ही हैं, पर काम इनका वह नहीं रहा, जिससे जनताका इनके द्वारा उपकारके बदले अपकार होने लगा है।

ऐसे महन्त पुजारियोंकी संख्या आज कम नहीं है, जिनके पास लाखों और करोड़ोंकी संपत्ति है।

यह लोग धनवान जमींन्दारोंकी तरह नियमपूर्वक अपना काम-काज चलाते हैं। इनके दीवान हैं, कारकुन हैं, मुनीम हैं, गुमास्ते हैं, यहाँतक कि सिर्फ इनका वेश साधुका रह

गया है नहीं तो यह पक्के गृहस्थ हैं। इनके यहाँ बाकायदा बच्छों-को बधिया किया जाता है, किसानोंसे लगान वसूल करनेके समय उनकी डंडोंसे पूजा की जाती है। अदालतोंमें तो इनके यहाँ वकील और मुहर्रिर नौकर ही रहते हैं। ऐसा कोई दिन शायद ही जाता हो जिस दिन इनके ठाकुरजीके नामपर दो-चार मुकदमोंकी पेशी न होती हो।

जब इनकी सवारी निकलती है, तब आगे-आगे एक हाथीपर श्रीठाकुरजीका सिंहासन विराजमान रहनेपर भी श्रीमहन्त महाराजका ठाट-बाट किसी राजे-महराजेसे कम नहीं रहता। यहाँतक कि कहीं-कहीं तो सूर्य भगवान-का पूर्ण प्रकाश रहते हुए भी मशालोंकी रोशनी साथ चलती है।

जब ऐसी सवारी गाँवोंमें निकलती है तो गाँववालोंका इनकी और इनकी सवारीके पशुओंकी खुराक जुटाते-जुटाते दम निकल जाता है। चाहे उनके लिए एक वक्तका पूरा खानेको भी घरमें मौजूद न हो, पर महाराजजी और उनके साथियोंके लिए तो मोहनभोगका अवश्य प्रबन्ध होना ही चाहिये।

श्रीविश्वनाथजी कहते चले गये कि भाइयो, यह सब बातें आप मजेमें जानते हैं। आपमेंसे बहुतोंने इस कठिनाईका

अवश्य सामना भी किया होगा तथा इससे होनेवाले कुपरिणाम-पर भी दो आँसू बहाये होंगे। पर हममें एकता न होनेके कारण इसका कुछ प्रतिकार नहीं हो सका।

अब समय आ गया है। हमलोगोंको इन सारी धर्मार्थ सम्पत्तियोंका फिरसे उद्धार करना होगा। पहलेकी तरह इसे फिर जनताकी बनाना होगा तथा व्यक्तिगत आमोद-प्रमोदकी वस्तुके बदले इसे जनता जनार्दनकी ही चीज निश्चित करनी होगी।

आजकल इन स्वार्थी साधुओं और महन्तोंकी शहरोंमें कोई प्रतिष्ठा नहीं रही, अवश्य ही इनके स्वार्थमें जो लोग भागीदार हैं, वे इनका खूब मान करते हैं, पर हमारी ग्रामीण जनता जो आज भी धर्मके नामपर इनपर काफी श्रद्धा रखती है, इन लोगोंके प्रचारकोंके भुलावेमें आकर इन्हें साक्षात् भगवानका स्वरूप मानकर अपना सर्वस्व इनपर न्यौछावर करनेके लिए तैयार रहती है।

इन्हीं अपने भोले ग्रामीणोंको हमें यह विषय अच्छी तरह समझाना होगा तथा ऐसे उपाय करने होंगे जिनसे वे भविष्यमें और ऐसी भूलें न करें।

आरम्भमें इस विषयमें सुधार करने में हमें काफी संकटका सामना करना पड़ेगा। इनके स्वार्थी सेवकोंकी

लाठियोंका प्रहारतक सहना पड़ेगा। इनके प्रचारक जनता-में हमारे कार्यकर्त्ताओंके विरुद्ध काफी भ्रम फैलावेंगे। अपनी बेईमानी छिपानेके लिये हमलोगोंपर नाना प्रकारके झूठे लांछन लगानेतकमें न चूकेंगे। पर हमें इन सब बातोंका कोई भय नहीं है। यदि हम सच्चे बने रहकर निःस्वार्थ भावसे जनताकी भलाईके उद्देश्यसे काम करते रहेंगे तो कुछ दिन बाद इनकी सारी पोल खुल जायगी और बादमें हमारा काम बहुत सहज हो जायगा।

श्रीविश्वनाथजीने कहा—इस विषयमें मुझे एक उदाहरण याद आ गया है। एक बारकी बात है, मैं एक मन्दिरकी कमेटीका एक सदस्य था, उस मंदिरके नीचे कई तरहके काम होते थे। मन्दिरके भोग रागके लिए एक छोटीसी गौशाला भी उसमें खुली हुई थी। इस गौशालाका प्रबन्ध एक त्यागी साधुके हाथमें था। भक्तोंकी कृपासे अच्छी-अच्छी दूधारू गायें यहाँ बराबर आती रहती थीं। चारे-दानेका तो कोई अभाव ही नहीं था। एक-एक भक्त पूरे सालका देनेको तैयार थे। इसलिए मन्दिर कमेटीके सामने कभी इसके विषयमें कोई शिकायत नहीं आयी।

कमेटीके हम सभी सदस्य यह समझ रहे थे कि गौशाला-के प्रबन्धक महोदय निःस्वार्थ भावसे ही यह काम कर रहे

हैं। उन महाशयकी बातों और नम्रताके बर्तावसे भी ऐसी ही भावना हो रही थी।

एक दिनकी बात है, मैं उस गौशालाके भीतर जा निकला। कोई बीस बाईस बड़ी ही सुन्दर गायें वहाँ मौजूद थीं, उनमेंसे दस ग्यारह तो दूध देती थीं, पूछनेपर मालूम हुआ कि वे सभी आठ-आठ दस-दस सेर दूध देती हैं। इस हिसाबसे कमसे कम सवा दो या अढ़ाई मन दूध होना चाहिये, जिसमें भगवानके भोगमें तो सिर्फ पच्चीस तीस सेर दूध जाता था। मेरे मनमें प्रश्न उठा कि बाकी दूधका क्या होता है? लोगोंसे पूछनेपर वे एक दूसरेका मुँह देखने लगे, किसीने कोई बात स्पष्ट नहीं बतलायी। मैंने भी उस समय इस विषयपर चुप रह जाना ही उचित समझा।

दूसरी ओर गया तो एक सुन्दर साँड़ तथा पाँच छः हृष्ट-पुष्ट बछड़े-बछड़ी बँधे हुए दिखाई दिये। प्रश्न करनेपर कि इतनी गायोंमें इतने कम बछड़े क्यों हैं? उत्तर मिला कि यहाँ बछड़े बहुत कम बचते हैं, इस समय जो ग्यारह बारह गायें दूध देती हैं, उनमें सिर्फ तीनके ही बछड़े हैं, बाकी सब मर गये। जो दूधसे हट गयी हैं, उनकी संख्या दस ग्यारह होनेपर भी सिर्फ दो ही बछड़े बचे हैं।

सुनकर बड़ा आश्चर्य हुआ, इतनी अच्छी गायें, इतना सुन्दर प्रबन्ध, फिर बच्चे न बचनेका क्या कारण है? यह भी सुना है कि यहाँकी गायें समयपर पाल नहीं खातीं। कई तो दो-दो तीन-तीन सालतक गाभिन न होनेके कारण निकालकर बाहर कर दी जाती हैं। हर साल पाँच चार गायें नयी खरीदनी पड़ती हैं। यहाँकी बछिया गाय बनके ब्याई हो ऐसा तो उदाहरण ही नहीं मिला हाँ, दो तीन सालके बाद यहाँके ही बच्छोंमेंसे एक अच्छा साँड़ अवश्य मिल जाता है।

दूधके विषयमें पता लगाते समय बहुत-सी ऐसी बातें मालूम हुईं, जिनसे उन त्यागी प्रबन्धक महाशयके विषयकी हमारी पहली धारणामें बहुत भारी धक्का लगा। लोग तो यही जानते थे कि वे निःस्वार्थ भावसे अवैतनिक रूपसे काम कर रहे हैं, पर मालूम हुआ कि एक धनी भक्तके यहाँसे उन्हें बराबर मासिक वेतन मिल रहा है। साथ ही उनके एक भाई भी गौशालामें ही रहकर काम देख रहे हैं, जो दूध आदि सभी वस्तुओंसे काफी लाभ उठा रहे हैं। यहाँतक भी पता चला कि उनके पास इतनी पूँजी हो गयी है कि वे लोगोंको सूदपर रुपया भी उधार देते हैं।

धीरे-धीरे यह भेद कमेटीके अन्य सदस्योंको भी मालूम हो गया। अब तो भारी खलबली मची। अन्तमें कमेटीने यह निश्चय किया कि एक स्वतन्त्र वेतन-भोगी कर्मचारी गोशालाकी देख-भालके लिए रखा जाय। एक अच्छा आदमी मिल भी गया जिसने सारी बातोंको अच्छी तरह समझकर अपने ढंगसे काम करना आरम्भ किया।

आरम्भमें निम्न कर्मचारियोंके द्वारा उन्हें काम सँभालनेमें काफी बाधाएँ सहनी पड़ीं। यहाँतक कि एक-बार वे बेचारे अपनी इसी सेवाके फलस्वरूप लाठियोंसे खूब पीटे भी गये। पर वे थे दृढ़ भावनाके जीव, इसलिए यह सब सहकर भी उन्होंने कामकी व्यवस्थामें जरा भी रियायतसे काम नहीं लिया।

मन्दिरका एक बाग था, जिसका कुछ अंश ऐसे ही खाली पड़ा हुआ था, पूरी संभाल न होनेके कारण वहाँके माली ही उसका मनमाना उपयोग कर रहे थे। इन नये महाशयने वहाँ नेपियर घास लगा दी, बागकी सिंचाईका पहलेसे ही पूरा प्रबन्ध था। इसलिए सिर्फ दो आदमी और बढ़ा देनेसे गोशालाके लिये पूरी घास यहाँसे मिलने लगी।

इस तरह घास मिलते रहनेसे गायोंके लिये बाजारसे जो भूसा खरीदा जाता था, वह बन्द हो गया। इसपर उन त्यागी महाशयने काफी हो-हल्ला मचाया, मंदिरके भक्तोंको यह कहकर बहकाना आरम्भ किया कि अब नये प्रबन्धमें गायोंका भूसा बन्द करके उन्हें सिर्फ घास ही खिलाई जा रही है। लोगोंने उनके बहकावेमें आकर कमेटीके सदस्योंके सामने शिकायत की, पर मैं तो यह सब हाल पहलेसे ही जानता था, इसलिये कमेटीके सामने इस मदका सारा हिसाब रख दिया, जिसमें गोशालाके इस मदका प्रायः दो सौ रुपये महीनेका खर्च बचने लगा था। इधर हरा चारा मिलनेसे तथा दूधकी सँभाल होनेसे, मन्दिरका दूधका काम चलाकर भी, एक मन दूध बिकनेके लिये गाहकोंके पास जाने लगा था। इस मदसे प्रायः दो सौ रुपये मासिककी बचत होने लगी।

श्रीविश्वनाथजी कहते चले जा रहे थे कि इतना सुधार हो जानेके बाद अब उक्त नये प्रबन्धक महोदयने, गायोंकी खुराककी ओर ध्यान दिया। इस मदमें भी काफी पोल चल रही थी। लोगोंके देखनेमें तो उन्हें कई बार खानेको दिया जा रहा था, पर जितना लिखा जाता था, उससे आधा भी उनके पेटमें नहीं पहुँचता था। यह तो मन्दिरमें दर्शनोंको

आनेवाले भक्तोंकी कृपा थी कि वे लोग प्रायः नित्य ही कुछ-न-कुछ गायोंको खिलानेके लिये लाया करते थे। यह इतना अधिक हो जाता था कि इसके कारण गायोंकी चरबी इतनी बढ़ गयी थी कि उनकी गर्भ धारण करानेकी शक्ति ही मारी जा रही थी। खासकर उनके समयपर बच्चा न देनेका यही प्रधान कारण था।

उन्होंने भक्तोंको यह बात समझानी आरम्भ की तथा सामान रखनेके लिए अलग-अलग बर्तन रखा दिये जिसमें वे लोग सामान छोड़ दिया करें और गायोंको सिर्फ दो बार खिलानेका प्रबन्ध कर दिया। सो भी उनके स्वास्थ्यपर ध्यान रखते हुए। इसका फल यह हुआ कि उनकी जो अस्वाभाविक मोटाई थी, वह धीरे-धीरे हटकर अपने यथार्थ रूपमें आ गयी। इस प्रबन्धसे भी जो मन्दिरकी ओर से खुराकी दी जाती थी, वह प्रायः सारीकी सारी बन्द हो गयी, सिर्फ भक्तोंके चढ़ाए हुए दानेसे ही पूरा काम चलने लगा। इस मदसे भी सैकड़ों रुपये मासिककी बचत होने लगी। साथ ही सबसे बड़ा लाभ यह हुआ कि उनमेंसे अधिकांश गायें गाभिन हो गयीं।

पहले तो खराब समझकर कुछ गायें हर साल वहाँसे बाहर कर दी जाती थीं, पर उतनी ही भक्तों द्वारा नयी

आती रहनेसे यह त्रुटि लोगोंकी समझमें नहीं आ रही थी, पर अब तो पहली गायोंके समयपर बच्चा देनेसे तथा नयी गायोंके पहलेकी तरह आती रहनेसे गायोंकी संख्या बढ़ने लगी तथा जहाँ दो-चार ही बच्चे दिखाई देते थे, वहाँ काफी बच्चे कूदते-फाँदते दीखने लगे। पर गोशालाकी यह अवस्था होनेमें प्रायः एक साल लग गया था। इस बीचमें ही उन त्यागी महोदयने इसी खुराकीकी घटनाको लेकर वह बवण्डर खड़ा किया कि लोग सचमुच ही यह समझने लगे कि अवश्य ही बचतको ध्यानमें रखकर यह नये कर्मचारी महोदय गायोंको भूखों मार रहे हैं।

पर कमेटी पहलेसे ही सावधान थी। उसके सामने बराबर सब आँकड़े आ रहे थे। गायोंकी तन्दुरुस्ती दिन-दिन सुधर रही थी। बच्चोंकी संख्या भी उसी तरह बराबर बढ़ती जा रही थी। अब मन्दिरमें दूधका ड्योढ़ा खर्च हो जानेपर भी दो मन दूध रोज बिकने लगा था, खर्च बिलकुल कम हो गया था, चारों ओरसे आयके रास्ते निकल रहे थे। सेवक कर्मचारियोंकी संख्या भी पहलेसे काफी कम हो गयी थी, हालाँकि पहलेसे पशु प्रायः दुगुने हो गये थे।

अन्तमें कमेटीने समझ-बूझकर यही तय किया कि अब हमें किसी निःशुल्क सेवककी आवश्यकता नहीं है, इसलिये उक्त महोदयको अलग कर दिया जाय। बस, कमेटीका यह निर्णय करना था कि उक्त महोदयने गलेमें ढोल बांधकर कमेटीकी चारों ओर निन्दा करनी आरम्भ की, पर लोगोंने उन्हें अच्छी तरह समझ लिया था, उनका सच्चा त्याग भी लोगोंपर प्रकट हो चुका था। इसलिये उनके प्रचारसे आरम्भमें तो कुछ ऐसे लोग जो गोशालाके नये प्रबन्धकी पूरी बात नहीं जानते थे विचलित हुए, पर जब उनपर भी सच्ची बात खुल गयी तो उक्त महोदयको अपनासा मुँह लेकर बैठ जाना पड़ा।

———

# दशम परिच्छेद

पहली सभाके पन्द्रह दिन बाद स्वयंसेवकोंके प्रतिनिधियोंका जमाव हुआ, सभी गाँवोंके प्रतिनिधि आये थे। नियमित रूपसे सभाका कार्य आरम्भ हुआ।

श्रीविश्वनाथजीकी रायसे पाँच-पाँच गांवोंके प्रतिनिधियोंने मिलकर अपनेमेंसे एक योग्य उपप्रधानका नाम पेश कर दिया। इस तरह बहुत थोड़े समयमें ही बीसों उपप्रधानोंके नाम चुन लिये गये और इन बीस उपप्रधानोंने सर्वसम्मतिसे श्रीविश्वनाथजीको अपना प्रधान चुना।

इस तरह बहुत थोड़े प्रयत्नसे ही लगभग पाँच हजार नवयुवकोंका सुन्दर सङ्गठन हो गया।

इधर श्रीमती अन्नपूर्णादेवी भी चुप नहीं बैठी थीं। उन्होंने भी इधर-उधर घूम फिरकर नवयुवतियोंकी एक सुन्दर टोली बना ली। यद्यपि उनकी संख्या एक हजारसे अधिक नहीं थी पर नवयुवकोंसे इनमें स्वाभाविक रूपसे ही त्यागकी मात्रा अधिक रहनेके कारण इनकी अल्प संख्या भी पर्याप्त समझी गयी।

इस प्रकार इधर तो संगठन हो रहा था, उधर भगवानने इनकी परीक्षाका अवसर उपस्थित कर दिया। यह प्रान्त गङ्गा और सरजूके बीचमें पड़ता था, पाँच-सात साल पहले एक बार दोनों नदियोंमें खूब जोरोंकी बाढ़ आयी थी जिससे सारे गाँव जलमग्न हो गये थे। लाखों रुपयोंकी हानि तो हुई ही थी, साथ ही सैकड़ों मनुष्यों और हजारों पशुओंका भी बलिदान हो गया था।

इस साल भी उसी तरह नदियाँ बढ़ती चली आ रही थीं। यद्यपि अभीतक बाढ़ आनेकी सीमासे जल कुछ नीचे ही था, पर ऐसा मालूम देने लगा था कि यदि इसी प्रकार जल बढ़ता चला गया तो दस पन्द्रह दिन बाद फिर वही प्रलयकारी काण्ड उपस्थित हो जायगा।

स्वयंसेवकोंके प्रधानके नाते श्री विश्वनाथजीने उप-प्रधानोंकी एक मीटिङ्ग बुलाकर इससे बचनेके उपायोंपर विचार किया। सर्वसम्मतिसे तय हुआ कि जहाँ-जहाँ कमजोर किनारे हैं, वहाँपर बालूसे भरे बोरोंका बाँध बाँधना आवश्यक है। यद्यपि यह काम बहुत व्ययका कूता गया, पर भविष्यमें होनेवाली हानिके सामने यह बहुत छोटी रकम सिद्ध हुई।

जो गाँव पानीमें डूबे जाते थे, उनसे कुछ अधिक

और ऊँचेपर बसे हुए ग्राम-निवासियोंसे कुछ कम चन्दा लेनेकी व्यवस्था की गयी। पिछले दिनों लोगोंकी अवस्था सुधर जानेसे बहुत थोड़े परिश्रमसे ही एक खासी रकम इकट्ठी हो गयी।

एक ओर तो पुराने बोरोंकी खरीद आरम्भ कर दी गयी दूसरी ओर स्वयंसेवकोंके साथ ग्रामनिवासियोंने मिलकर इन्हीं नदियोंकी बालूसे भरे बोरोंकी दीवाल बनानी आरम्भ कर दी। यह कार्य इतनी शीघ्रतासे किया गया कि भयके स्थानतक पानी पहुँचनेके पहले ही सिर्फ इन एक सौ ग्रामोंके लिये ही नहीं, बल्कि इनसे कई गुने अधिक विस्तारतक यह बालूकी दीवार तैयार हो गयी।

यदि साधारण अवस्थामें इस तरहका कार्य किया जाता तो लाखों रुपये खर्च करनेपर भी इतनी शीघ्रतासे यह काम पूरा न हो पाता। पर यहाँ तो कुछ हजारोंमें ही इसकी पूर्ति हो गयी। बात यह थी कि नदीके किनारेके बसनेवाले लोगोंने अपने-अपने ग्रामोंके सामनेकी इस दीवालको बनानेमें स्वयंसेवकोंका पूरा-पूरा साथ दिया और रात दिनकी बिना परवाह किये जबतक काम पूरा न हो गया, इसमें जी-जानसे जुटे रहे।

पुरुष समाज इधर इस काममें लगा हुआ था तो वहाँका

स्त्री समाज घर और खेतके दैनिक कामको पूरा करनेमें जुटा हुआ था। अवश्य ही इसमें महिला स्वयंसेवक दल काफी सहायता पहुँचा रहा था। जिन गृहस्थोंके यहाँ काम करनेवाली स्त्रियाँ तो कम थीं और काम अधिक था उनकी सहायता स्वयंसेविकायें कर रही थीं। साथ ही यह भी व्यवस्था कर दी गयी थी कि जिन स्वयंसेविकाओंको अपना काम अपने करना था, उन्हें इस अवसरपर स्वयंसेविकाकी जिम्मेदारीसे छुट्टी दे दी गयी।

इस तरह पुरुष समाजने एक बड़े भारी भयसे अपनेको बचानेका साधन उपस्थित कर लिया तो इधर महिला समाजने उन्हें गृहस्थीके कामोंसे निश्चिन्त करके दैनिक काममें जरा भी त्रुटि न आने दी।

नदियोंका पानी बढ़ा और खूब बढ़ा, पर यहाँके भविष्यद्रष्टा और कर्मिष्ठ लोगोंकी बुद्धिमत्ता, एवं परिश्रमशीलतासे बहुत ही कम हानि हुई। वह भी नया बाँध होनेके कारण जहाँ-तहाँ थोड़ा पानी फूट निकलनेके कारण। यदि यों कहा जाय तो अत्युक्ति न होगी कि जहाँ असावधान लोगोंने इस बाढ़से हानि उठाई, वहाँ यहाँके लोगोंने कई तरहका लाभ उठाया।

बांधके नीचेकी वह जमीन जिसे पहले पानीमें डूब

जानेके भयसे कोई बोता-जोतता न था, अब सारी आबाद हो गयी। बाँधके कारण जमीनकी सतहसे ऊपरतक पानी बँधा रहनेके कारण आस-पासकी जमीनमें काफी सील रहनेसे वहाँकी फसल बहुत थोड़े परिश्रमसे ही बहुत अच्छी हुई। सैकड़ों बीघा जमीन मुफ्तमें मिल गयी सो अलग।

स्वयंसेवक दलका व्यापक रूपसे यह पहला ही काम होनेके कारण उनके भीतरकी कुछ बुराइयाँ भी सामने आयीं जिनके लिए उन्हें खूब सावधान करके भविष्यमें इनसे बचे रहनेके लिए समझा दिया गया।

इन बुराइयोंमें कुछ तो ऐसी थीं जो अपने सगे सम्बन्धियों-की कुछ रियायत कर देनेके रूपमें थीं। जैसे स्वयंसेवकोंके भोजनालयका काम किसी प्रधान कार्यकर्त्ताने अपने ही किसी सम्बन्धीको सौंपकर इस विषयकी उनकी त्रुटियोंको उचित अनुचित रूपसे दबा देनेका प्रयत्न किया या वस्तुओं की खरीदका अपने ही आदमियोंको काम सौंपकर उसमें कुछ हानि कर दी अथवा बचे हुए सामानका पूरा हिसाब न बता सके या चन्दा वसूलीके समय कुछ खास लोगोंको रियायत कर दी।

यद्यपि मनुष्य स्वभाव अपने लोगोंको विशेष सुविधा

देनेके लिए उत्सुक देखा जाता है पर इस कामसे प्रबन्ध और व्यवस्थामें जो गड़बड़ी मचती है, उससे असल कामको काफी क्षतिग्रस्त होना पड़ता है।

यह सब तो जो हुआ सो हुआ, पर एक बात बहुत ही विचित्र हुई, कुछ नेताओंको इस कामका निरीक्षण करनेके लिए बुलाया गया था, उनके स्वागत-सत्कारमें हमलोगोंको जो कठिनाइयाँ उठानी पड़ीं, वह किसी बड़ेसे-बड़े हाकिम या राजे-महराजेके स्वागतको भी कहीं-कहीं मात कर रही थीं। इससे भी अधिक एक और मजेकी बात थी कि इन महानुभावोंके साथ प्रायः एक नौकर या कर्मचारी भी आया था जिसकी खातिर इन महानुभावोंसे भी अधिक करनी पड़ी थी। बादमें जब विदाईका समय आया तब उनके राहखर्च और रेल भाड़े आदिका बिल चुकाते समय तो होश ही उड़ गये।

उनमेंसे अधिकांशने दया करके फर्स्ट और सेकेण्ड क्लासका भाड़ा न लेकर सिर्फ ड्यौढ़े दर्जेका ही वसूल किया था। साथ ही मोटर और टेक्सीका किराया न लगाकर तांगा और गाड़ी भाड़ा ही लिया था, पर हिसाब लगाने से मालूम हुआ कि यदि वे सेकेण्ड क्लासमें आते और मोटरमें स्टेशनतक पहुँचते तो भी उनके वर्तमान

बिलसे कुछ कम ही लगता। क्योंकि दो ड्यौढ़ेका टिकट एक सेकेण्ड और एक सर्वेण्ट टिकटसे कम नहीं रहता; वैसे ही यदि ताँगा किराया आठ और बारह आना एक ओरका लगे तो फिर टेक्सीका कोई रुपया दो रुपया तो लगता ही नहीं। ऊपरसे मजा यह कि रास्तेके नास्ते वगैरहका होटल खर्च भी चार-चार पाँच-पाँच रुपया वसूल किया गया था और यह सब राष्ट्रसेवाके नामपर हुआ; एहसानमंद बनानेका एक उत्तम रास्ता था।

इसके लिये किसीने चूँ तक न की। करते भी कैसे? जो धड़ल्लेसे निर्भीकतापूर्वक व्याख्यान दे सकते हैं, नोकदार लेखनी-से कड़े शब्दोंमें आलोचना कर सकते हैं तथा चुभती हुई कविता बना सकते हैं; भला उनके विरुद्ध कोई एक भी शब्द कहनेका अधिकारी हो सकता है?

जितना खर्च इतने बड़े कामको पूर्ण करनेमें लगा था उसका एक अच्छासा अंश इसी एक मदमें लग गया। दूसरी ओर चाहे एक-एक पैसेकी बचत की गई हो, पर इस मदमेंसे तो एक पाई भी घटानेका अधिकार नहीं था। क्योंकि इस कामकी पूर्णताकी छाप तो इन नामी नेताओंसे ही प्राप्त करनी थी।

पर इसमें कोई संदेह नहीं कि हम लोगोंके मनपर इसका बहुत ही बुरा प्रभाव पड़ा तथा भविष्यके लिए एक अच्छी शिक्षा प्राप्त हो गयी।

---

# एकादश परिच्छेद

पिछली घटनाओंको घटे काफी समय बीत चुका है। इस बीचमें श्रीविश्वनाथजी और उनके सहकारियोंके उद्योगसे उनके प्रान्तमें काफी सुधार हो चुका है। अब शहरोंमें पहलेकी सी चहल-पहल नहीं रही। उसके बदले गांवोंमें बढ़ गई है। पहले एक ही किसानके कई जगह खेत थे, अब वे नई व्यवस्थाके अनुसार एक ही जगह हो गये हैं तथा किसान लोग अब पहलेकी तरह गाँवमें एक दूसरेसे सटे हुए घर न बनाकर अपने खेतोंमें ही सुन्दर खुलासा घर बनाकर अलग-अलग रहने लगे हैं। इससे अब सारा देश एक ही शहरसा मालूम देने लगा है।

लोकल बोर्डोंकी आर्थिक दशा सुधर जानेसे, जाने-आनेके साधन भी बहुत अच्छे हो गये हैं सुन्दर और पक्की सड़कोंका सब जगह प्रबन्ध हो गया है। बिजली, मोटर, टेलीफोन और रेडियो आदि सभी आधुनिक साधन उपलब्ध हो गये हैं। पहलेकी तरह सब अनाप-शनाप करोंका भार न रहनेसे यह सभी वस्तुएँ सुलभ हो गई हैं।

जिन्होंने दस साल पहले इन गाँवोंको अपनी दरिद्रावस्थामें रोते हुए देखा था, आज इन्हें अपनी सम्पन्न अवस्थामें हँसते हुए देखकर उन्हें अवश्य आश्चर्यान्वित होना होगा। पहले जहाँ टूटी-फूटी झोपड़ीका भी ठिकाना नहीं था, वहाँ अब सुन्दर बँगले दिखाई दे रहे हैं, जो छोटे-छोटे बगीचोंमें बने हुए हैं। जिन बालकोंके खानेका भी ठिकाना नहीं था, वे ही आज अच्छे-अच्छे वस्त्रोंसे सजे हुए हृष्ट-पुष्ट इधर-उधर खेलते दिखाई दे रहे हैं।

जिस जगह फलोंकी तो कौन कहे साग तरकारीका भी ठिकाना नहीं था, वही आज फल और मेवोंका सदाव्रत-सा बँट रहा है। कोई भी राह चलता चाहे जहाँसे अपनी इच्छानुसार फल तोड़कर खा सकता है। इस तरहके व्यवहारको लोग अपना अहोभाग्य समझते हैं। दूध-दहीकी तो बात ही न पूछिये। वह तो इतना सुलभ हो गया है कि उसका व्यवहार आजकल पानीकी तरह हो रहा है और हमारी उस पुरानी कहावतको चरितार्थ कर रहा है जिसमें यह कहा गया है कि भारतमें उन दिनों दूध-दहीकी नदियाँ बहा करती थीं।

खेतोंकी उपजका तो कहना ही क्या है, जिस तरह अमेरिका आदि देशोंकी उपजकी बातें पढ़-सुनके हमलोगोंको

आश्चर्य होता था, आज अपने खेतोंमें ही उस तरहकी फसल देखके हमें अपने ऊपर ही सन्देह होने लगता है कि कभी हम इतने हीन हो गये थे कि इन बातोंका स्वप्न भी हमें अच्छा नहीं लगता था।

यद्यपि हम सर्वतोमुखी उन्नति प्राप्त कर रहे थे, पर आज भी अपने प्राचीन स्वभावके अनुसार अनावश्यक व्यय न कर डालनेके कारण हमारी सम्पत्ति खूब जोरोंसे बढ़ रही थी। कुछ दिनों पहले जहाँ अरबोंके कर्जदार बनकर करोड़ों रुपये सूदके रूपमें बाहर भेज देते थे वहाँ अब हमारी ही पूँजी बाहरमें सूदपर लगी हुई थी जिससे एक बड़ी-सी रकम हमें हर साल मिलने लगी थी।

आज भी हमें पूरी स्वतन्त्रता प्राप्त नहीं हुई है, हमें सिर्फ औपनिवेशिक स्वराज्यके अधिकार भर मिले हैं, पर हमारा राष्ट्र अब इतना बलवान हो चुका है कि हमारी मित्रतासे ब्रिटिश साम्राज्यको काफी सहारा मिल रहा है।

जिन महात्मा गांधीके अहिंसा बलकी हिटलर, मुसोलिनी आदि हँसी उड़ाया करते थे और ग्रेटब्रिटेन भी अपने स्वार्थके कारण परवाह नहीं करता था, वही सब पिछले सन् ३९ के युद्धमें तबाह होकर आज अपने भारी-भारी मारू हथियारोंको समुद्रमें फेंककर उस बूढ़े ऋषिके

चरणोंमें बैठकर उनसे उस अहिंसाके महामन्त्रकी दीक्षा ले रहे हैं।

आज न तो कहीं पनडुब्बियाँ दिखाई देती हैं और न बड़े-बड़े लड़ाकू जहाज ही। हवाई जहाजोंके लिये तो सबने मिलकर यह तय कर लिया है कि सिवा सवारी और डाकके इन जहाजोंसे और कोई काम न लिया जाय। यहाँतक कि माल ढोनेका कामतक इनसे नहीं लिया जाता।

अब जातियोंके हिसाबसे देशका बँटवारा हो गया है। जो देश अन्य किसी राष्ट्रके हाथमें अब भी दिखाई दे रहे हैं। वह सब कुछ सालोंकी मियाद डालकर उन्हें सौंपे गये हैं, भारत भी इसी तरहका एक देश है। अगले दो सालोंके बाद वह बिलकुल स्वाधीन हो जायगा।

अब यहाँ हिन्दू मुसलमानोंका झगड़ा नहीं होता। न मन्दिर मसजिदका ही भेद है, ईश्वरके विषयमें जिसका जैसा विश्वास है वह अपने मतके अनुसार उसकी प्राप्तिका उपाय करे, इसमें एक दूसरेको कुछ भी आपत्ति नहीं है।

जो लोग पहले अपने किसी भीतरी स्वार्थके लिये इनमें भेद उत्पन्न करके इन्हें दूर-सेदूर हटाते जा रहे थे आज संसारकी दृष्टिमें उनका स्थान बहुत नीचे चला

आया है और अब वे एक साधारण आदमीसे अधिक नहीं समझे जाते।

× × × ×

प्रिय पाठको! राधा और माधवको अपने काममें लगे हुए छोड़कर हम उन्हें भूलसे गये थे, आज इतने दिनों बाद हम पुनः उन्हें आपके सामने उपस्थित करते हैं। इस समय राधा पूर्ण वयस्का एक युवती हो चुकी है और माधव भी एक हृष्ट-पुष्ट युवक।

आज राधाका विवाह है।

"किसके साथ? क्या माधवके साथ?"

"नहीं! बलदेवके साथ?"

"ऐसा क्यों हुआ? इन दोनोंमें तो बालकपनसे ही प्रेम चला आ रहा था। सबका यही ध्यान था कि समय आने पर दोनोंका विवाह हो जायगा।"

"यद्यपि इनका प्रेम पूर्ण मात्रामें था, पर वह सिर्फ एक भाई-बहिनके प्रेमसे अधिक नहीं। न तो कभी राधाके मनमें ही यह धारणा हुई थी कि वह कभी माधवको अपने पतिके रूपमें पायेगी और न माधवने ही राधाको किसी दूसरी दृष्टिसे देखा था।"

"बलदेवके साथ राधाका परिचय कैसे हुआ?"

"सिर्फ एक ही तरहके व्यवसायके कारण ! दोनोंका कारबार एक ही तरहका होनेसे परस्पर मिलने-जुलनेका काम पड़ता था। उसीके फलस्वरूप यह ब्याह हो रहा है।"

"क्या इस विवाहमें कोई नई बात होगी ?"

"हाँ, अवश्य कुछ नया और निरालापन होगा।"

"वह क्या ?"

"बिलकुल साधारण-सी बात है, विवाह होनेके बाद इन दोनोंकी सारी पूँजी जो इस समय कई लाखकी है, वह राष्ट्रको अर्पण कर दी जायगी तथा यह सम्पत्ति अपनी भविष्यकी आय-मेंसे भी सिर्फ भोजन-छाजन भरको रखकर अपनी सारी आय राष्ट्रके कामोंके लिए देते रहेंगे"

"वाह भाई वाह, यह तो आपने अच्छी खबर सुनाई, यदि इसी तरह हमारे देशके नवयुवक और नवयुवतियाँ अपनेको राष्ट्रके लिए सौंप दें तो फिर हमें और क्या चाहिए।"

ऊपर लिखी बातचीत दो साधारण ग्रामीणोंमें हुई जो राधा और बलदेवके विषयमें बहुत अधिक नहीं जानते थे पर उनके इस त्यागसे काफी प्रभावित हो गये थे।

इसी समय एक दूसरा विवाह भी रचा जा रहा था जिसमें माधव और चम्पाका गठबन्धन होनेवाला था, यह दोनों विवाह एक साथ ही हुए। सारे प्रान्त भरके कार्यकर्त्ता सम्मिलित हुए थे।

पर इस बार किसी नेताने अपने राहखर्चका बिल पेश नहीं किया। करनेकी कोई आवश्यकता भी नहीं थी। सबकी जेबें रुपयोंसे भरी थीं, पेट और मन भी भर गया था। स्वतन्त्रतासे जो वस्तु प्राप्त होनी चाहिये, वह सब इनको मिल चुकी थी। देशमें अब सभी इनके थे, किसी खास व्यक्तिको अपना माननेकी अब कोई आवश्यकता नहीं रह गई थी।

❀ समाप्त ❀